RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 01 प्रकाशन तिथि : 25 दिसम्बर कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 जनवरी, 2024

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

पूज्य श्री तनसिंह जी

जन्म शताब्दी समारोह

28 जनवरी 2024, रविवार, अपराह्न 12.15 बजे

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली

'क्षात्र धर्म की दिव्य प्रभा से जग उजियारा होगा रे'

पूज्य श्री तनसिंह जी

जन्म शताब्दी समारोह

28 जनवरी 2024, रविवार, अपराह्न 12.15 बजे

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली

निवेदक

श्री क्षत्रिय युवक संघ

संघशक्ति

4 जनवरी, 2024

वर्ष : 61 अंक : 01

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

❍ समाचार संक्षेप	✍		04
❍ नव वर्ष संदेश-2023	✍	श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	05
❍ चलता रहे मेरा संघ	✍	श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	06
❍ पूज्य श्री तनसिंह जी	✍	श्री चैन सिंह बैठवास	07
❍ माँ	✍	जागृति कंवर हरदासकाबास	22
❍ बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास	✍	श्री खींवसिंह सुलताना	24
❍ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍	श्री भँवर सिंह मांडासी	26
❍ आदर्श और अनूठे गाँव	✍	कर्नल हिम्मतसिंह	29
❍ यक्ष द्वारा पाण्डवों से कलियुग पर पूछे गये प्रश्न	✍	श्री गोविन्द सिंह कसनाऊ	32
❍ अपनी बात	✍		34

समाचार संक्षेप

- ❖ जामड़ोली (जयपुर) के निकट स्थित राजपूतों की ढाणी में 29 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुखश्री के सान्निध्य में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ।
- ❖ जन्म शताब्दी वर्ष से सम्बन्धित कार्यक्रमों में 29 अक्टूबर को गोहिलवाड़-सौराष्ट्र संभाग के हालार प्रान्त में स्नेह मिलन कार्यक्रम संपन्न हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा तथा वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृतिबा हरदासकाबास का सान्निध्य मिला। गोंडल स्थित एसआरपी ग्राउण्ड में वरिष्ठ स्वयंसेवक शक्तिसिंह कोटड़ा द्वारा अपनी सेवा निवृति पर कार्यक्रम रखा गया। गुजरात के खेड़ा जिले के देवा गाँव में भी स्नेह मिलन कार्यक्रम 29 अक्टूबर को आयोजित हुआ। जन्म शताब्दी समारोह के पोस्टर के गुजराती संस्करण का विमोचन भी किया गया। 29 अक्टूबर को संघशक्ति कार्यालय जयपुर में स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। यहीं पर 28 अक्टूबर को जयपुर संभाग की कार्य योजना बैठक भी सम्पन्न हुई।

29 अक्टूबर को राजस्थान एवं दिल्ली एनसीआर में रहने वाले प्रवासी समाज बन्धुओं ने पारिवारिक स्नेह मिलन मनाया। इसी दिन द्वारका मोड़ दिल्ली में शस्त्र पूजन कार्यक्रम आयोजित हुआ। राजपूत राष्ट्रीय मेधावी छात्र-छात्रा मेरिट पुरस्कार समारोह भी इसी दिन केशवपुरम दिल्ली में आयोजित हुआ। इसी दिन मुरादाबाद जिले में महाराजा मुकुटसिंह संस्थान की वार्षिक बैठक सम्पन्न हुई। इसी दिन राजपूत सभा गाजियाबाद के स्थापना दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इन सभी कार्यक्रमों में जन्म शताब्दी कार्यक्रम की जानकारी दी गई, संघ की जानकारी दी गई तथा जन्म शताब्दी कार्यक्रम में आने का निमंत्रण भी दिया गया।

उदयपुर के झाड़ोल में 29 अक्टूबर को बैठक आयोजित की गई। 5 नवम्बर को उदयपुर के बंभोर क्षेत्र में सम्पर्क बैठक रखी गई। मेवाड़ बागड़ संभाग क्षेत्र में भी सलूम्बर क्षेत्र में 5 नवम्बर को सम्पर्क बैठक का आयोजन रहा। इसी दिन जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय तनाश्रम में स्वयंसेवकों की बैठक सम्पन्न हुई। 8 नवम्बर को उदयपुर में अलखधाम में शहर प्रान्त की बैठक आयोजित हुई। बांसवाड़ा में भी 8 नवम्बर को बैठक आयोजित हुई। 10 नवम्बर को उदयपुर के सेमारी गाँव में सम्पर्क बैठक सम्पन्न हुई। बागड़ क्षेत्र के देवदा चोखले के पड़ोली राठौड़ गाँव में 12 नवम्बर को बैठक कल्ला जी मंदिर में रखी गई। सभी में जन्म शताब्दी कार्यक्रम हेतु निमंत्रण दिया गया।

क्षत्रिय सम्राट मिहिर भोज, भीमदेव सोलंकी, सुहेलदेव बैंस व कासलजी भाटी की स्मृति में बुलन्दशहर के निकट चोला गाँव में आयोजित समागम में 28 जनवरी को दिल्ली पहुँचने का निमंत्रण दिया गया। जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष शाखाओं का भी आयोजन रहा। 29 अक्टूबर को चित्तौड़गढ़ के मेडीखेड़ा में, इसी दिन चित्तौड़गढ़ प्रान्त में ही सेंथी में, 5 नवम्बर को प्रान्त के चौथपुरा में साप्ताहिक शाखाओं का आयोजन हुआ तथा 28 जनवरी हेतु निमंत्रण दिया गया।

जन्म शताब्दी समारोह हेतु संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री बलवंतसिंह जी पांची ने अपनी उम्र 93 वर्ष में 93 गाँवों की यात्रा करने का निश्चय किया था। 6 नवम्बर को वे सोनगढ़, अमरगढ़, आंबला, सणोसरा, सरवेड़ी, पीपड़ी, नोंघणावादर व बड़ेली गाँवों में यात्रा हेतु पहुँचे और इसके साथ ही 101 गाँवों की यात्रा सम्पन्न हुई।

गिडानियाँ (झुंझुनू) में 12 नवम्बर को स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ, जन्म शताब्दी

(शेष पृष्ठ 5 पर)

नव वर्ष सन्देश–2023

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तन सिंह जी की 100वीं जयन्ती (शताब्दी वर्ष) 25 जनवरी (25.1.1924 – 25.1.2024) के स्थान पर 28.1.2024 को राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में मनाई जाएगी। संघ के सभी सहयोगी व स्वयंसेवक उसकी तैयारी में अत्यधिक व्यस्त हैं फिर भी संघ स्थापना दिवस भी उसी विशाल कार्यक्रम का ही भाग है। प्रतिवर्ष संघ की ओर से एक संदेश प्रसारित किया जाता है। इस वर्ष का संदेश इससे श्रेष्ठ और कुछ नहीं, बस इतना ही है कि पूरे राष्ट्र के हर प्रदेश से लोग आएँगे, दुनिया के कुछ अन्य देशों के समाज प्रेमी लोगों को भी आमंत्रित किया जा रहा है। सभी में समाज प्रेम की, सौहार्द की, एकजुटता की भावना का जागरण उदित हो। विश्व गुरु भारतवर्ष ने संसार को यही संदेश वेदों, उपनिषदों, सुशासन व्यवस्था, न्याय, सहिष्णुता और त्याग के माध्यम से प्रदान किया है। यह प्रयास भी नया नहीं। उसी प्राचीन संदेश का अर्वाचीन संस्करण है। संघ ने पिछले 77 वर्षों के साधना काल में स्वयंसेवकों को अभ्यास शिविरों के माध्यम से उच्चादर्शों के अनुशरण, स्वाचरण में समाजोनुकूल बदलाव लाकर समाज का मार्गदर्शन किया है। जिस देश के नर–नारी समान रूप से ऐसे कार्य में नहीं जुटते तब तक ऐसे प्रयास श्रेष्ठ परिणाम नहीं दे सकते। अतएव मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, सर्वकला निपुण भगवान श्री कृष्ण हमारे आदर्श हैं।

मध्यकालीन इतिहास से समझा जा सकता है कि क्षत्रियों ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना सम्पूर्ण मानव जाति ही नहीं, पशु–पक्षियों की रक्षा की है, वनस्पति व भारत भूमि की माँ सदृश सेवा की है। आज ये सभी हमारी ओर देख रहे हैं। उनके करुण क्रंदन की पुकार हम सुनें। भगवान हमें इस योग्य सामर्थ्य प्रदान करें। इसी आशा के साथ श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने 78वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

इस संदेश को पढ़ने सुनने वालों के प्रेम का अभिलाषी!

आपका

भगवान सिंह रोलसाहबसर

पृष्ठ 4 का शेष

समाचार संक्षेप

कार्यक्रम की बात हुई। बरवाली गाँव के समाज बन्धुओं ने पारिवारिक स्नेह मिलन संघशक्ति प्रांगण में आयोजित किया। 15 नवम्बर को मूलाना में वीर श्री पिथोरा जी स्मृति दिवस मनाया। 14 नवम्बर को लणवा (मेहसाणा) में स्नेह मिलन रखा गया। 15 नवम्बर को जोबनेर गढ, गुरु जलंधर नाथ शाखा सेखाला, 13 नवम्बर को सहाड़ा मण्डल का स्नेह मिलन, 15 नवम्बर को बीकानेर में नारायण निकेतन में दीपावली स्नेह मिलन, इन सभी में जन्म शताब्दी वर्ष की चर्चा की गई।

19 नवम्बर को पुठोली गाँव में, 26 नवम्बर को लांगच गाँव में चित्तौड़गढ़ की साप्ताहिक शाखाएँ सम्पन्न हुई। 26 नवम्बर को साणंद में, 26 नवम्बर को ही हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के पाली, बसाई, धोली, बास खुडाना आदि गाँवों में, 19 नवम्बर को कुंडा (वागड़) में, 15 नवम्बर को चुड़ियावाड़ा गाँव में, जयसमन्द में, खिन्दारा गाँव (पाली) में, पाली शहर में, केलवाद में, सोजत मण्डल के सारंगवास, बीजागुड़ा, देवली, हुला, लाडपुरा, केरखेड़ा गाँवों में, पिंडवाड़ा तहसील के सांगवाड़ा, काछोली और तरूंगी गाँवों में, जालोर में आहोर मण्डल के बालोत पट्टा, तखतगढ़, बलुपुरा व सिंधलावटी क्षेत्र में सम्पर्क हुआ और इन सभी कार्यक्रमों में जन्म शताब्दी कार्यक्रम हेतु निमंत्रण दिया गया।

- जयपुर संभाग के सहयोगियों की बैठक 27 नवम्बर को सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली के कार्यक्रम की तैयारी हेतु जिम्मेदारियाँ दी गई।

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर–2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा 22.05.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश)

शुचिता.. पवित्रता.. शुद्धता..यह भगवान की ओर बढ़ने की साधना का प्रथम सूत्र है। भगवान के मंदिर में हम जाते हैं तो देखते हैं, पुजारी है वो पूरे मंदिर को पहले साफ करते हैं और भगवान के मंदिर को, मूर्ति को स्नान कराते हैं। बहुत प्यार से, बहुत ढंग से। पूज्य तनसिंह जी जब शतचंडी यज्ञ किया करते थे, चौहटन की पहाड़ी पर वैर माता के मंदिर में जो एक छोटा सा.. कुटिया जैसा था, तो बताते थे कि जब मैं माता जी को स्नान कराता हूँ तो सांसारिक भाव आ जाते थे। स्नान कराता हूँ, उनके सर पर हाथ रखता हूँ, उनकी छाती पर भी हाथ रखना पड़ता है, बड़ी लाज आती है। यह कब लाज आती है? जब हम उसमें जीवंतता देखते हैं, जब हम उससे जुड़े हुए होते हैं। ये सब शुचिता के अंग हैं।

हमारे इस शरीर के बारे में अरविंद ने कहा है यह जगन्नाथ का रथ है, परमेश्वर का वाहन है, उसका सम्मान किया जाना चाहिए। आपका शरीर...सबसे पहले जो हमको दिखाई देता है...उस शरीर में भगवान स्वयं विराज रहे हैं। तो भगवान जहाँ विराजते हैं वहाँ अशुद्धि नहीं रहनी चाहिए। यह जाँच हमको रोज करते रहना चाहिए, प्रतिक्षण करते रहना चाहिए कि कोई इतर भाव, जिस काम के लिए हम आए हैं, जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम आए हैं..उससे भिन्न कुछ भी सोचना या उससे...हमारा मन कहीं भी भटकता है तो शुचिता गायब हो जाती है। वह एडल्टरेशन हो जाता है, मिलावट हो जाती है और जहाँ मिलावट है, वहाँ शुद्धता नहीं है।

इसीलिए सारी व्यवस्था शिविर में इस प्रकार की की गई है कि मैं मेरे घट के अतिरिक्त कहीं भी जाने के लोभ का संवरण नहीं करूंगा। जिन लोगों के साथ में, जिस घटनायक के पीछे मुझे चलना है, उसी की आज्ञा का पालन मैं करूंगा। इसके अतिरिक्त किसी और से मित्रता करने का भाव अशुद्धि पैदा करता है और मन जब निर्मल नहीं है तो भगवान वहाँ कैसे रहेंगे? तो भगवान का निवास है, हमारे हृदय में निवास है, लेकिन वो हमको दिखाई नहीं पड़ेंगे, हमारी दृष्टि से ओझल हो जाएँगे। तो अशुद्धता का कितना बड़ा नुकसान हमको उठाना पड़ता है, हानि उठानी पड़ती है। तनसिंह जी ने कहा है, ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अंतःकरण की शुद्धि आवश्यक है और उन्होंने जो अंतःकरण की शुद्धि का उपाय बताया है, वो बताया है–स्वधर्म का पालन।

हमारे धर्म का हम पालन करें। हम इंसान हैं, इंसान के धर्म का पालन करें। हम विद्यार्थी हैं, विद्यार्थी धर्म का पालन करें। लेकिन जाना कहाँ है, यह सदैव याद रखें। पढ़ करके हमको करना क्या है, यह ध्यान रखें। नौकरी कर ली, लेकिन उसका उद्देश्य पेट पालन नहीं है। उस परमपिता परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए भगवान ने ये तो साधन दिए हैं। यह शरीर पहला साधन है, जिसमें दो आँख हैं, दो नासिकाएँ हैं, दो कान हैं, मुख है, दो हाथ हैं, दो पाँव हैं, गुदा है, और उपस्थ है। ये सब साधन हैं आपके पास में। यदि...अपनी मेहनत से यदि आप फर्स्ट डिवीजन आते हैं...जिसका आजकल कोई महत्त्व नहीं है...लेकिन आप टॉपर होते हैं तो आपको यह गर्व होना चाहिए कि भगवान ने मेरे ऊपर कितनी बड़ी कृपा की है और ऐसे ही यदि आप कोई बड़े ऑफिसर बनते हैं तो वह भी भगवान की कृपा है। बहुत लोग पढ़ते हैं लेकिन जिस पर भगवान की कृपा होती है, वही वो पा सकता है। हर चीज में भगवान को देखना अंतःकरण की शुद्धि में ही शामिल है। तो स्वधर्म पालन करना, यह क्षत्रिय युवक संघ के दृष्टिकोण से एक बहुत बड़ी शुचिता है। आज के मंगल प्रभात में क्षत्रिय युवक संघ की ओर से यही हमको मंगल संदेश है। ●

पूज्य श्री तनसिंहजी

– चैनसिंह बैठवास

संसार में जीव आता है और चला जाता है। उनके द्वारा विहित और निषिद्ध जितनी क्रियाएँ होती हैं, उन सब क्रियाओं का नाम कर्म है। जीवन काल में उनके द्वारा किये गये कर्म ही उनकी पहचान बनते हैं। महापुरुष अपने जीवन का हेतु समझते हैं और उसी हेतु के अनुरूप कर्म करते हैं जबकि सामान्य व्यक्ति निरुद्देश्य जीवन जीता है, यही दोनों में अन्तर है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके कर्मों में छिपा रहता है। महापुरुषों के देह त्याग के बाद भी उनके किये गये कर्म भावी पीढियों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनके कार्यों से सम्बल मिलता है, उनसे मार्गदर्शन मिलता रहता है। ऐसे महापुरुषों को जनमानस अवतार कहते हैं जो अपने अस्तित्व की अमिट छाप इस संसार में छोड़ जाते हैं, जो कभी मिटने की नहीं। जबकि सामान्य व्यक्तियों के जीवनकाल में उनके द्वारा किये गये कार्य उनके जीवन के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। उन्हें कोई याद नहीं करते। उनकी पहचान उनकी जीवन लीला के साथ ही खत्म हो जाती है।

पूज्य श्री तनसिंह जी का अवतरण भी एक महापुरुष के रूप में हुआ। वे अपने अस्तित्व की अमिट छाप इस संसार में छोड़ गये, जो कभी मिटने की नहीं। समय बीत गया पर वे आज भी अजर-अमर हैं और सदैव अजर-अमर ही रहेंगे। वे तो कालजयी थे अतः वे आज भी हैं, कल भी थे और नित्य रहने वाले हैं।

पूज्य की तनसिंह जी का जन्म इस समाज व राष्ट्र की विलक्षण उपलब्धि है। पूज्य श्री एक, उनके रूप अनेक। वे बहु आयामी व्यक्तित्व के बेजोड़ धनी होने के कारण लोगों को विविध रूपों में भासते थे। हर व्यक्ति के देखने के दृष्टिकोण अलग-अलग होते हैं। इन दृष्टिकोण के अनुसार यदि देखा जाय तो पूज्य श्री का एक रूप नहीं, विविध रूपों में वे हमारे समक्ष आये। पूज्य श्री के पूरे जीवन पर नजर डालें तो पायेंगे कि वे अधिवक्ता थे, राजनीतिज्ञ थे, लेखक थे, साहित्कार थे, गीतकार थे, मनोविश्लेषक थे, किसान थे, व्यापारी थे, समाज सेवक थे, इतिहासकार थे, मातृ भक्त थे, संगठनकर्ता थे, आदर्श नेता थे, सद्गुरु थे, उच्च कोटि के योगी थे, युगावतार थे, तपस्वी थे, युग पुरुष थे, युग दृष्टा थे।

वे जो भी थे, जैसे भी थे, उनका जीवन अत्यन्त सादगीपूर्ण था। एक सामान्य व्यक्ति की तरह, सामान्य लोगों के बीच उनका उठना-बैठना रहा। उन्होंने अपना सारा जीवन एक सामान्य व्यक्ति की तरह अपने साथ रहने वाले सहयोगियों के साथ जिया। ग्रामीण परिवेश, साधारण भोजन, साधारण रहन-सहन, सबके साथ-सबके बीच रहना, साथ-साथ खाना, धरती पर सबके साथ सोना, सबके साथ उठना, सबके साथ खेलना, सबके साथ गाना उनका जीवन था।

पूज्य श्री स्वयं सिद्ध पुरुष थे, पर जन मानस के सामने सदैव सामान्य बने रहे। वे असाधारण और प्रतिभावान होते हुए भी उन्होंने अपने दिव्य स्वरूप को कभी प्रगट नहीं होने दिया। वे जो कुछ प्रकट हुए अपने आचरण से ही हुए। महापुरुषों के आचरण को सामान्य बुद्धि से नहीं परखा जा सकता। बरसों तक सैकड़ों-हजारों लोग उनके साथ रहे, पर जो कुछ देखा समझा, जाना, अनुभव किया, वह न के बराबर, ज्यादा कुछ प्राप्त नहीं कर पाये। वे हम लोगों के लिए अबूझ पहेली बने रहे, पर वे अप्रगट रहकर भी हजारों लोगों के जीवन में उजाला कर गये, उन्हें जीवन जीना सीखा गये, सद्मार्ग की राह दिखा गये, तिल-तिल कर जलने की प्रेरणा दे गये, नियमितता व निरंतरता का पाठ पढा गये,

अपने उत्तरदायित्व का भान व कर्तव्यबोध करा गये, ध्येय के लिए जीना, ध्येय के लिए मरना और जनमानस के लिए जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर गये। इतना ही नहीं-यह जीवन किसी की धरोहर है, अमानत है, इसे सम्भाल कर रखना, सहेज कर रखना हमारा दायित्व है-यह सीख भी दे गये।

पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन की आध्यात्मिक क्षमताओं को विरले ही समझ पाये। उन्हें केवल दो व्यक्ति ही जान पाए। उनमें एक दिलावर सिंह जी चचाणा ने ज्यों ही उनको जाना त्यों ही वे इस संसार से विदा हो गये। दूसरे व्यक्ति थे पूज्य श्री नारायणसिंहजी रेड़ा, जिन्होंने ज्योंही उनको जाना, उनके चरणों में समर्पित होकर उनकी प्राप्ति में लग गए।

पूज्य श्री तनसिंह जी को समझना सागर की थाह लेना है। उन्हें उनके स्तर का ही जान सकता है, समझ सकता है। उनके हाव-भावों को भी वही समझ सकता है। साधारण स्तर का व्यक्ति उनका सही आंकलन नहीं कर सकता। वह अपने स्तर के अनुरूप ही उनका आंकलन करेगा जो सही नहीं हो सकता। इसलिए पूज्य श्री साधारण को साधारण और विशिष्ट को विशिष्ट लगते थे।

पूज्य श्री तनसिंह जी एक बार बाला सती जी 'बापजी' के धाम पधारे। सती जी 'बाप जी' ने उनसे कहा- ''आप तो घणां छिप्योड़ा रैवो हो। आप प्रगट क्यों नहीं हो रहे हैं।'' वे सती जी 'बापजी' की इस बात पर मुस्कराकर रह गये। पूज्य श्री के साथ आए लोगों को बाला सतीजी 'बापजी' ने कहा-''ये महापुरुष हैं, पर प्रगट नहीं हो रहे हैं।''

पूज्य श्री कभी-कभी पोसालिया (सिरोही) के बाबा देवाराम जी महाराज के वहाँ जाया करते थे। देवाराम जी महाराज ने भी पूज्य श्री से कहा-''मैं तो तुम्हारे पीछे सदा जोगमाया को खड़ी देखता हूँ।''

इस तरह ऐसे दिवा प्रतिभावान व्यक्ति होते हुए भी वे एक साधारण व्यक्ति के रूप में जनमानस के बीच बने रहे। उनका जीवन विलक्षणताओं से भरा पड़ा है। वे असाधारण होते हुए भी हम सबके बीच में सामान्य जीवन जीते रहे। उनकी सादगी, ईमानदारी सरल स्वभाव, निष्कपट व पारदर्शी व्यक्तित्व के कारण वे आम लोगों में लोकप्रिय थे।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी चाह प्रगट करते हुए कहा-

जाति की फुलवारी में पुष्प बनाना।
ताकि मैं सौरभ से जग को रिझाऊँ।।

उनकी चाह थी कि सामाजिक फुलवारी में पुष्प बनूँ और परमेश्वर की दी हुई सौरभ सब में बांट दूँ। ऐसे भाव वाले पूज्य श्री ने व्यक्तिगत उपलब्धियों को सदैव ठुकराया। अकेले कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा न रखते हुए उन्होंने सदैव सामुहिक प्रगति के मार्ग को अपनाया। उनके लिए व्यक्तिगत हित की अपेक्षा सामाजिक हित सर्वोपरी था।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने व्यष्टि से बाहर निकल कर समष्टि का अविभाज्य अंग बनने पर जोर दिया, इसलिए वे कहते थे-

''मैं उन विशिष्टताओं को नहीं भोग सकता जो मेरे समाज के लोगों का प्राप्त नहीं है। साधारणताएँ ही मेरी सम्पत्ति हैं। मेरी समस्त असाधारणताएँ सामाजिक न्यास हैं, जिसका हिताधिकारी समाज का प्रत्येक व्यक्ति है, इसीलिए मेरी विशिष्टताओं के फल को अकेला मैं ही कैसे खा सकता हूँ। जब तक मेरी असाधारणताएँ सामान्य जन की साधारणताएँ नहीं बन जाती, तब तक मुझे हठपूर्वक उन व्यक्तिगत भोगों और कामनाओं से बचना है जो मेरे प्रत्येक साथी को उपलब्ध नहीं है, फिर वे कामनाएँ चाहे मुक्ति की ही क्यों न हों।''

समाज की व्यथा से व्यथित पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया-

''मैंने छोटी उम्र में ही समझ लिया था कि मेरा जीवन मेरे लिए नहीं, परमार्थ के लिए है। मैंने कम उम्र

में ही समाज की दुख भरी अवस्था देखी। जितने आँसू मैंने अपने और अपने कुटुम्ब के लिए नहीं बहाए, उतने अपने समाज के लिए बहाए। समाज की व्यथा से व्यथित होकर मैंने अपना विद्याध्ययन, विवाह, नौकरी, कुटुम्ब पालन और जीवन के समस्त व्यापार समाज के चरण वन्दना में समर्पित कर दिये और समाज बन्धुओं से भी ऐसी ही अपेक्षा करता हूँ।''

निसंदेह पूज्य श्री तनसिंह जी असाधारण थे। उन्होंने अपनी समस्त असाधारणताओं को सामाजिक न्यास बना दिया। ऐसे असाधारण व्यक्तित्व को पहचानना कैसे सम्भव है।

पूज्य श्री एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने छोटे से जीवन में सभी आयामों को छू लिया। कई लोगों ने उनको राजनीतिज्ञ के रूप में देखा, तो कई लोगों ने उनको एक कुशल व्यापारी के रूप में देखा, तो कई लोगों ने उनको एक सामान्य ग्रामीण व किसान के रूप में देखा, तो कई लोगों ने उनको एक साहित्यकार व लेखक के रूप में देखा, तो कई लोगों ने उनको एक संगठनकर्ता के रूप में देखा, तो कई लोगों ने उनको एक आदर्श नेता के रूप में देखा, तो कई लोगों ने एक कुशल प्रशासक के रूप में देखा, तो कई लोगों ने उन्हें एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में देखा। वे बहु आयामी व्यक्तित्व के बेजोड़ धनी होने के कारण इस तरह विविध रूप में लोगों के सामने आये। इन विविध रूपों में पूज्य श्री का जो रूप जिसको भाया, उसी रूप में पूज्य श्री को समझा और उन्हें पाया तथा उसी रूप को उन्होंने अपने दिल और दिमाग में बसा लिया या यह कहें कि पूज्य श्री के जिस रूप ने उन्हें प्रभावित किया, जिस रूप ने उनके मर्म स्थल (हृदय) को छूआ, वही रूप उनके दिल और दिमाग में घर कर गया, उनके रोम-रोम में बस गया।

पूज्य श्री तनसिंह जी एक-

राजनीतिज्ञ- राजनीति में वे दो बार कुशल विधायक और दो बार सजग सांसद रहे। राजनीति में सक्रिय रहने पर भी किसी प्रकार का मल, धन, भ्रष्टाचार, पद लोलुपता उन्हें छू तक न सके। कीचड़ की राजनीति से वे सदैव ऊपर थे। वे अवसरवादी राजनीति से सदैव दूर रहे। वे उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे, पर वे राजनीति के अधीन कभी नहीं रहे। राजनीति तो उनकी चेरी रही। उन्होंने अपने सिद्धान्तों व आदर्शों पर राजनीति को कभी हावी नहीं होने दिया। वे पदलोलुप राजनीतिज्ञ नहीं थे। उनका राजनीति में रहने का मकसद श्री क्षत्रिय युवक संघ का हित साधन था। राजनीति में रहते उन पर आर्थिक नैतिक अथवा चारित्रिक स्तर पर कभी भी अंगुली नहीं उठी। वे निष्कपट राजनीतिज्ञ थे। उनकी छवि सदैव अनुकरणीय आदर्श राजनीतिज्ञ की रही। उनकी वाणी में जादू था। वे जब भी सदन में बोलते तो सभी मंत्रमुग्ध हो शांतिपूर्वक उनकी बात सुनते थे। पहली बार सांसद बनकर लोकसभा में बजट सत्र में बजट पर उन्होंने जो भाषण दिया, उसे सुनकर तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित नेहरू ने कहा बजट पर ऐसा सारगर्भित तथा संतुलित भाषण मैंने पहले कभी नहीं सुना। भारत-चीन युद्ध के दौरान संसद में जब विपक्ष सरकार को घेरने लगी तो पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा-''यह समय आरोप-प्रत्यारोप का नहीं है यह समय एकजुट होने का है।'' पूज्य श्री की इस बात पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने तहे दिल से पूज्य श्री को धन्यवाद दिया। चाहे संसद हो या विधानसभा जब भी बोले, एकदम सटीक तथा रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ बोलते थे।

कुशल व्यापारी- पूज्य श्री ने व्यापार किया और व्यापार को परवान पर चढ़ाया तो कई लोगों ने उन्हें एक कुशल व्यापारी के रूप में देखा। उन्होंने अर्थ को आवश्यकता अनुरूप ही महत्त्व दिया। वे अर्थ के पीछे कभी नहीं पड़े, पर अपने साथ रहने वालों को स्वावलम्बी बनाने के लिए उन्होंने व्यापार शुरू किया।

व्यापारी के रूप में अपने जीवन में व्यापार कर अनेकों अपने साथियों को रोजगार मुहैया भी कराया। व्यापार के क्षेत्र में उतरकर, व्यापार को खूब विस्तार दिया। व्यापारी समूह में लेन-देन के मामले में उनकी पैठ व ईमानदारी की साख थी।

किसान- पूज्य श्री तनसिंह जी के पूरे जीवन पर नजर डालें तो वे हमें सादा जीवन और सादी वेशभूषा में नजर आयेंगे। सफेद लट्ठे की धोती, खाकी कमीज व खाकी साफा उनकी वेशभूषा थी। वे एकदम ग्रामीण परिवेश में किसान के रूप में हर समय, हर जगह, हर किसी की नजरों में नजर आते थे। वे सादगी के मूर्तरूप थे। वे किसान की तरह खेती के हर काम में पारंगत थे। खेती का काम करना उनका शौक था। उन्हें किसान की तरह खेतों में काम करते व ट्रेक्टर से खड़ाई करते देखा।

साहित्यकार- पूज्य श्री उच्च कोटि के साहित्यकार थे। उनके साहित्य में कला, संस्कृति, शृंगार प्रकृति, वीरता, अध्यात्म आदि जीवन के सभी अंगों का समावेश है। उनका साहित्य समाज की अमूल्य धरोहर है। उनका साहित्य सृजन ही उनका प्रकटीकरण है। साहित्य सृजन में शुरू से ही उनकी रुचि थी। उन्होंने शुरू-शुरू में मासिक पत्र ''संघर्ष'' का मुद्रण महावीर प्रिंटिंग प्रेस, बाड़मेर से शुरू किया। राजस्थान की लोक-कथाओं में वर्णित शृंगार रस के नायकों और ऐतिहासिक पुरुषों की अमर गाथाओं का, गीतों और दोहों का संकलन कर ''राजस्थान रा पीछोला'' नामक पुस्तक का मुद्रण करवाया।

गीता उनका प्रिय ग्रंथ था। गीता का गहन अध्ययन करके उन्होंने समाज सेवा के तत्व खोज निकाले। उन्होंने अपनी रचना ''गीता और समाज सेवा'' में जीवन जीने का सरलतम तथा सुगम मार्ग बताया। पथ विचलित, स्वधर्मच्युत, कर्तव्य कर्म से विमुख क्षत्रियों में क्षत्रियोचित गुणों का संचार करने के लिए पूज्य श्री ने ''गीता और समाज सेवा'' की रचना की। हारे हुए क्षत्रिय का सम्बल उनकी पुस्तक गीता और समाज सेवा है। यह हमें अपने प्रकृति प्रदत्त कर्तव्य कर्म करने की प्रेरणा देती है। हम अपने स्वाभाविक कर्म त्याग चुके हैं। यह कहती है कि स्वाभाविक कर्म कभी त्यागना नहीं चाहिए, बल्कि स्वाभाविक कर्म ही करते रहना है। स्वाभाविक कर्मों का त्याग न तो सम्भव है, न वह सात्विक त्याग ही है। कर्तापन की भावना का त्याग ही सात्विक त्याग है।

समाज कार्य करने वालों को अच्छे और बुरे सभी मिलते हैं। गीता और समाज सेवा कहती है कि समाज सेवक को सबसे समान व्यवहार करना चाहिए, ऐसा व्यक्ति ही लोकसंग्रह के लिए अति उपयोगी है। गीता और समाज सेवा हमें आश्वस्त करती है कि कार्य की सफलता इस जीवन में नहीं तो अगले जन्म में अवश्य मिलेगी। पूज्य श्री कहते हैं-निष्काम भाव से कर्म करने से कर्म के दोष नहीं लगेंगे। फल और आसक्ति से रहित हुआ कर्म मोह, लोभ, द्वेष आदि पैदा नहीं करता और साथ ही साथ कर्तव्य मार्ग में परिणाम की चिन्ता से मुक्ति देता है। भगवद् गीता उनके जीवन का आदर्श रहा।

''साधना पथ'' पुस्तक में पूज्य श्री ने योग मार्ग को भलीभाँति परिभाषित किया है। साधना पथ व्यष्टि का समष्टि में एक्य भाव यानी व्यष्टि का आस्तित्व समष्टि में समाहित होना है। अन्ततः परमेष्टि को प्राप्त करने का मार्ग है। इस पर चलकर ही महान कार्यों की पूर्ति के लिए ईश्वर से एकता स्थापित की जा सकती है।

भूस्वामी संघ के दूसरे आन्दोलन के समय पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी गिरफ्तारी दी और उन्हें टोंक जेल में रखा गया। जेल में रहते उन्होंने ''जेल जीवन के संस्मरण'' नामक पुस्तक लिखी। जेल में व्याप्त अराजकताओं, बंदियों पर होने वाले अमानुषिक व बर्बर जुल्मों भरी यह पुस्तक है। जेल में पूज्य श्री के साथ राजनैतिक कारणों से दुर्व्यवहार किया गया जिसका उन्होंने भरसक विरोध किया।

पूज्य श्री ने समाज के लोगों में त्याग और बलिदान की भावना तथा सहयोगी और सामूहिक जीवन जीने की भावना का अभाव पाया और यह भी पाया कि समाज के लोगों में नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक चरित्र निरंतर गिरता जा रहा है। निजी स्वार्थ और सुखान्वेषण की बलिवेदी पर राष्ट्रहित को और समाज हित को चढ़ा देने में किसी को संकोच नहीं हो रहा है ऐसी स्थिति में देश का सर्वांगीण उत्थान असम्भव है। इस कमी को पूरा करने के लिए एक व्यवहारिक शिक्षण और मार्गदर्शन की आवश्यकता महसूस कर पूज्य श्री ने जेल में बैठे-बैठे ''समाज चरित्र'' पुस्तक की रचना की जिसमें बताया कि व्यक्ति का चरित्र ही समाज चरित्र की आधारशिला है और समाज चरित्र के अभाव में राष्ट्रीय व मानव चरित्र का कोई मूल्य नहीं है।

साधक साधना मार्ग पर सद्गुरु के निर्देशन अनुसार आगे बढ़ता है। सद्गुरु यानी शिक्षक साधकों का मार्गदर्शन प्रशस्त करता रहता है। साधना में सद्गुरु की भूमिका निभाने वाला शिक्षक कहीं समस्याओं के झंझावत में उलझ न जाए उनके निराकरण के लिए पूज्य श्री ने ''शिक्षक की समस्याएँ'' पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक में पूज्य श्री ने वस्तुतः अपनी समस्याओं के स्वरूप का चित्रण और निदान लिपिबद्ध किया है।

साधक साधना करते हैं तो उन्हें कई झंझावतों से गुजरना पड़ता है। साधना मार्ग में पग-पग फिसलन है। साधना पथ पर चलना तलवार की धार पर चलना है। साधना मार्ग में आने वाली रुकावटों, बाधाओं का निवारण करने के लिए पूज्य श्री ने ''साधक की समस्याएँ'' नामक पुस्तक की रचना की जो साधक को सम्बल व मार्गदर्शन देती है।

''झनकार'' पूज्य श्री का एक काव्य ग्रन्थ है। झनकार में गीतों के माध्यम से समाज के युवा वर्ग को उत्साहित व झंकृत कर उन्हें कर्तव्यबोध करवाया। झनकार के प्रारम्भिक गीत इतिहास से प्रेरित हैं, ऐतिहासिक घटनाओं, धरोहरों, स्मारकों और स्थूल प्रतीकों को माध्यम बनाकर रचे गए हैं। इतिहास हमारा अतीत है, गौरव है, हमारी पहचान है, इतिहास हमारा उद्गम है जहाँ से हमें पोषण मिलता है। इतिहास अपने पूर्वजों की वीरता, शौर्य, त्याग, बलिदान, कर्तव्य परायणता, शरणागत वत्सलता और धर्म निष्ठा आदि दिव्य गुणों से भरा पड़ा है जिसके समक्ष हम नतमस्तक हैं। ''होनहार के खेल'' और ''बदलते दृश्य'' में हमारे पूर्वजों के इन्हीं दिव्य गुणों का प्रकटीकरण किया गया है। ''झनकार'' के गीतों में आध्यात्मिकता की अलख है। झनकार जीवन का संगीत है, उमंग है, उल्लास है, आनन्द है। झनकार के गीतों में आराध्य की आराधना और निराकार के प्रति समर्पण है, भावों की गूढता है, विचारों की प्रगाढता है, दर्शन की गहराई है। ''झनकार'' के गीतों में पूज्य श्री का पूरा जीवन दर्शन मिलता है।

''एक भिखारी की आत्म-कथा'' पूज्य श्री तनसिंह जी की आप-बीती है। बहुआयामी व्यक्तित्व व संघर्षों के बेजोड़ धनी पूज्य श्री के जीवन का लेखा-जोखा व उनके अद्भुत व्यक्तित्व की कथा, इस रचना में समावेश है।

पूज्य श्री का अवतरण क्षात्र धर्म के अभ्युदय के लिए हुआ था। क्षात्र धर्म को समझने के लिए उन्होंने ''गीता और समाज सेवा'' पुस्तक की रचना की।

पूज्य श्री तनसिंह जी का साहित्य विचलित मानव को सही रास्ता दिखाने, उनका मार्गदर्शन करने तथा सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय जीवन जीने की शिक्षा देता है। उनकी रचना केवल गद्य में नहीं बल्कि पद्य में भी संवेदना का सागर बनकर बही है। पूज्य श्री ने अपने साहित्य में स्पष्ट किया है कि व्यक्ति समाज के लिए है। उनकी विशिष्टता, उनकी क्षमता, उनकी श्रेष्ठता समाज की धरोहर है। अतः व्यक्ति को अपनी विशिष्टता,

अपनी क्षमता, अपनी श्रेष्ठता समाज के हित में नियोजित करनी चाहिए। उन्होंने अपने साहित्य में संघ के जीवन दर्शन को विस्तार से समझाया है। वे विषम में पूर्णतया डूबकर लिखते थे और अपनी रचना के पात्रों को केवल अपने आस-पास अनुभव ही नहीं करते बल्कि उनमें रच-बस जाने वाले साहित्यकार थे।

लेखक– पूज्य श्री ने विद्यार्थी जीवन में ही लेख लिखना शुरू कर दिया था। वे हस्तलिखित प्रतियाँ अपने साथियों में बाँटने लगे। फिर उनके लेख पत्रिकाओं में भी छपने लगे। उनके लेखों ने समाज में नव चेतना जाग्रत की। उनके लेख पढ़कर ही आयुवानसिंह जी उनके सम्पर्क में आये। पूज्य श्री का लेखन कार्य अबाध गति से चलता ही रहता था। साहित्य रचना के साथ-साथ वे अपनों को अपने दिल की बात दिल खोलकर पत्र में लिखते रहते थे। वे अपनों को पत्र में अपने हृदय की बात लिखते थे। वे अपने अनुयायियों को पत्र द्वारा जीवन उपयोगी बातें बताकर उनका मार्गदर्शन करते रहते थे। उन्होंने अपनी लेखनी से समाज की पीड़ा का ग्राफ संघ दर्शन में उकेरा है। उन्होंने समाज की पीड़ा का प्रकटीकरण झनकार में जगह-जगह किया है।

कवि– पूज्य श्री आशु कवि थे। संगीत अथवा राग को सुनकर वे मौलिक गीत रच देते थे। वे ट्रेन में या कहीं पर भी बैठे तुरन्त-फुरत गीत रच डालते थे।

क्रान्तिकारी– पूज्यश्री ने अपने जीवनकाल में समष्टि योग के अन्तर्गत जो वैचारिक आन्दोलन चलाया, उसकी अन्तिम परिणिति क्रान्ति है। पूज्य श्री की क्रान्ति का अर्थ है व्यक्ति को भीतर से बिलकुल बदल देना यानी उनके भीतर पहले से जो धारणा है, अवधारणा है, उससे उनको मुक्त करा कर संस्कारवान बनाना, उसे व्यष्टि से बाहर निकाल कर उसको समष्टि का अविभाज्य अंग बना देना ताकि वह अपनी विशिष्टता, अपनी श्रेष्ठता व अपनी क्षमता का केवल न्यासी रहे और समष्टि के हित में अपना जीवन बिताये। क्रान्ति के भी कई प्रकार हैं जैसे-रक्त क्रान्ति, आर्थिक क्रान्ति, सत्ता हथियाने के लिए क्रान्ति आदि-आदि। पूज्य श्री ऐसी क्रान्ति के पक्षधर नहीं थे। पूज्य श्री ने तो वैचारिक क्रान्ति का आन्दोलन चलाया। उनकी वैचारिक क्रान्ति सात्विक तथा सृजनात्मक है, तो उनकी इस क्रान्ति की अवधारणा भी सात्विक तथा सृजनात्मक है।

मनोवैज्ञानिक व मनोविश्लेषक– पूज्य श्री को मनोविज्ञान का व्यवहारिक ज्ञान था इसलिए वे हर शिक्षार्थी की मनोदशा व भाव दशा को भाँप लेते थे। वे कहते थे कि शिक्षक को शिक्षार्थी के मन की आकांक्षाएँ, आदतें, स्वभाव व उनकी जिज्ञासा, उनके आचार-विचार से परिचित होना आवश्यक है। शिक्षार्थी के मन की महत्त्वकांक्षाओं, आदतों और स्वभाव से परिचित हुए बिना उस पर क्या प्रयोग किया जाए, इसका चयन शिक्षक नहीं कर सकेगा।

पूज्य श्री ने बताया कि मनोवैज्ञानिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति एक भिन्न इकाई है, इसलिए सामूहिक निर्माण कार्य में यदि प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान नहीं रखा जायेगा तो निर्माण कार्य में जगह-जगह पोल रह जायेगी, इसलिए व्यक्तिगत सम्पर्क और पारस्परिक विश्वास की आवश्यकता होती है।

पूज्य श्री ने शिक्षक का दोहरा कर्तव्य बताया है- (1) प्रत्येक शिक्षार्थी का मनोवैज्ञानिक सर्वेक्षण करना (2) शिक्षार्थी की प्रवृत्तियों को सही मार्ग में ढाल कर उस पर शुद्ध संस्कार डालना।

किसी व्यक्ति की पहचान करने में पूज्य श्री सफल पारखी थे। अनेकों में से काम के व्यक्ति को चयनित कर लेने में बड़ा पैनापन था। सो पत्थरों में से उपयोगी पत्थर उठा लेने की बेजोड़ क्षमता थी उनमें। किस व्यक्ति में कैसा भाव विलोड़ित हो रहा है, यह समझ पाने की अद्भुत क्षमता थी उनमें। मनोवैज्ञानिक दृष्टि होना संस्कार निर्माण में एक आवश्यकता है, यह उनका स्वभाव था।

समाज सेवक–

या देवी सर्वभूतेषु जाति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

पूज्य तनसिंह जी अपनी जाति को, अपने समाज को मातृ स्वरूपा मानकर जीवन पर्यन्त उसकी वन्दना करते रहे। अपने समाज की वन्दना करते हुए समाज को सम्बोधित कर पूज्य श्री ने कहा, उन्हीं की जुबानी–

''मेरे समाज! तुम्हारी–चरण वन्दना कर मैं तुम पर कोई उपकार नहीं कर रहा हूँ मैं तो कृतार्थ होना चाहता हूँ। मेरा विद्याध्ययन, विवाह, नौकरी, कुटुम्ब पालन और जीवन के समस्त व्यापार केवल इसी लक्ष्य की ओर प्रेरित हैं। मैं तो सर्वात्मना तुम्हारी शरण में हूँ। तुम्हारा शत्रु मेरा जानी दुश्मन है और तुम्हारे सेवक मेरे माता–पिता, बन्धु, सखा और सर्वस्व हैं। इसलिए मेरे समाज! मैंने अपने जीवन का एक भी दिन, द्रव्य का एक भी पैसा, शक्ति का एक भी अणु तथा हृदय का एक भी पवित्र भाव तुमसे छिपाकर नहीं रखा।

''मैंने अपने साथियों और सहयोगियों को भी अनेक बार समझाया कि तुम मुझसे जो वस्तु चाहते हो वह तुम्हें मिलेगी, बदले में मैं उनसे जो वस्तु चाहता हूँ वह मुझे मिले। मैं उनसे केवल एक ही वस्तु चाहता हूँ कि वे तुम्हारे (समाज के) लिए अपने जीवन के अन्तिम दिन तक, अपनी शक्ति की अन्तिम तड़फन तक, अपने विचारों की अन्तिम मान्यता तक और अपनी भौतिक उपलब्धियों के अन्तिम संचय तक वे तुम्हारी और केवल तुम्हारी सेवा के लिए कृत प्रयत्न हों।''

पूज्य श्री ने बताया–''जाति (समाज) का सुधार क्या करेंगे? हम अपनी जाति से, समाज से बड़े नहीं हैं बल्कि इस कौम के सामने अकिंचन है, इसलिए इस कौम के, इस समाज के एक अकिंचन भक्त बनकर इसकी सेवा करें, वन्दना करें, पूजा करें। इस भावना से हमारे भीतर न तो अहम् पोषित होगा और न सम्मान प्राप्त करने की झूठी भूख भी जाग्रत होगी।''

गीता का गहन अध्ययन करके उन्होंने समाज सेवा के तत्व खोज निकाले।

सद्‌गुरु– श्री कृष्ण सद्‌गुरु के रूप में पथ विचलित व धर्म विस्मृत अर्जुन के जीवन में आये और युद्ध सफल पर थोड़े समय में ही गीता ज्ञान देकर जीवन संघर्ष में उतारा और जीव रूपी अर्जुन को भवसागर पार कराया। इसी तरह पथ विचलित, स्वधर्म विस्मृत व कर्तव्य विमुख सुप्त क्षत्रिय समाज को जागृत कर कर्तव्य बोध कराने सद्‌गुरु के रूप में पूज्य श्री हम लोगों के मध्य आये और सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली के माध्यम से क्षत्रिय समाज के लोगों को संस्कारित व उनका शुद्धिकरण कर उनके जीवन को परिष्कृत व उन्नत बनाकर भवसागर पार कराने हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी साधना पथ पर अग्रसर किया। जीव अपना स्वधर्म पालन करता हुआ अन्तिम मंजिल ब्रह्म को पा जाता है। इसलिए व्यक्ति को अपने स्वधर्म का पालन करना चाहिए। गीता में कहा है–

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।।

अच्छी प्रकार आचरण किए हुए दूसरों के धर्म से गुण रहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में मरना भी कल्याण कारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

सद्‌गुरु पूज्य श्री ने हमें बताया कि स्वधर्म व्यक्ति का प्राकृतिक गुण और उद्देश्य होने के कारण वह ईश्वर का व्यक्ति के जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण आदेश है। सद्‌गुरु पूज्य श्री ने बताया कि क्षत्रिय का स्वधर्म क्षात्र धर्म है, वे अपने इस स्वधर्म का पालन करते हुए ईश्वर को पा सकते हैं।

सद्‌गुरु के बारे में कबीर जी ने कहा–

पर्वत की स्याही करूं, घोल समुद्र माहि।
धरती का कागज करूं, गुरु स्तुति लिखी न जाई।।

गुरु तो बहती गंगा की धारा
गुरु चरणन ने सबको तारा
गुरु ने चराचर सबको तारा।।
गुरु की महिमा कोई नहीं जाने
कोई नहीं जाने, कोई नहीं जाने
नहीं कोई पंडित, न कोई सयाने।।
पीर फकीर की वाणी में वो है
कोई न जाने, कोई नहीं जाने
न कोई पंडित, नहीं कोई सयाने।।

सद्गुरु पूज्य श्री ने बताया-''अन्त:करण की शुद्धि के बिना ईश्वर को प्राप्त करना अति दुर्लभ है।'' तो अन्त:करण शुद्ध कैसे हो?- उत्तर सद्कर्म से, तो प्रश्न उठता है सद्कर्म क्या है। उत्तर सद्कर्म स्वधर्म पालन है, अपने कर्तव्य का पालन है जिसके लिए प्रभु ने हमको संसार में भेजा है। इस काम को पूरा करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है।

पारिवारिक भाव- श्री क्षत्रिय युवक संघ में पूज्य श्री तनसिंह जी ने पारिवारिक भाव विकसित किया-कौन कहाँ जन्मा है, किसकी क्या उम्र है, किसकी क्या शिक्षा है, आर्थिक क्षमताएँ सबकी अलग हैं, कोई कहाँ का, तो कोई कहाँ का, फिर भी एक परिवार के भाव में रंगे हुए। परिवार के अलावा दूसरा कोई भाव ही नहीं आता। संघ हमारा परिवार है। हम सब इसी परिवार के हिस्से हैं, जबकि हम अलग-अलग जगह के हैं, पर आपस में सब में एक परिवार की भावना है। जितना परस्पर भाइयों में प्रेम नहीं, उतना आपस में प्रेम भाव है। पूज्य श्री ने अपनत्व का भाव हमें दिया। अनुशासन की भावना भी उनकी तपस्या की देन है।

एक बार पूज्य श्री और उनकी जन्मदात्री माँ (माँसा) के बीच घर खर्च के सम्बन्ध में संवाद हुआ। माँसा ने पूज्य श्री से कहा- ''बेटा! तूं घर के लिए जो पैसा देता है, वह घर खर्च चलाने के लिए पर्याप्त नहीं है, इससे मैं घर कैसे चलाऊँ,'' इस पर पूज्य श्री ने कहा- ''माँ! इस परिवार के अलावा मेरा एक और भी परिवार है उसे भी मुझे ही सम्भालना पड़ता है।'' तब माँसा ने कहा- ''तेरा और कैसा परिवार?'' तब पूज्य श्री ने कहा- ''इस परिवार के सम्बन्ध बने हैं-इस घर में जन्म लेने के कारण और उस परिवार (श्री क्षत्रिय युवक संघ) में सम्बन्ध बने हैं,-हमारे त्याग, तपस्या और साधना के आधार पर।

(1) जन्म का परिवार, (2) सांघिक परिवार।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने इस साँघिक परिवार के सम्बन्ध में अपने हृदय के उद्गार व भाव जो व्यक्त किये हैं, उन्हीं की जुबानी-

''जन्म के परिवार के सिवाय भी मेरा एक और परिवार है। एक ऐसा कुटुम्ब है, जिसने शायद इतिहास में पहली ही बार देश, काल, परिस्थिति, अवस्था और जन्म तक की सीमाओं का अतिक्रमण कर अपने आपका निर्माण किया है। मैंने जब कभी अपने इस परिवार की ओर देखा, मुझे प्रतीत हुआ जैसे पवित्रता अवतार लेकर आई है। पिता का वात्सल्य, माँ की ममता, गुरु की कृपा, भगिनी का स्नेह, बन्धु का बन्धुत्व, पत्नी की परायणता, पुत्र की भक्ति और जीवन के समस्त कर्तव्याधिकारों की धारायें अनेक होकर भी मेरे इस कुटुम्ब की एकता में समा गई हैं। मुझे अपने इस सांघिक परिवार पर गर्व है, जो बिछुड़े हुओं के मेले लगाता है, जंगल-जंगल की राख छानता है, रातें जगाता है, कष्टों और अभावों पर मुस्कराता है, प्रताड़नाओं और मेरी क्रोध भरी उलाहनाओं को अमृत समझ कर पीता है, गाँव-गाँव और नगर-नगर में घूम-घूम कर जिन्दगी के दीपक जलाता है और ठोकर लगने पर हर बार उठने का मंत्र सुनाता है।''

श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य श्री का एक आदर्श परिवार है और हर स्वयं सेवक को अहसास कराया कि परिवार क्या होता है। जिनको बड़े काम करने होते हैं, वे जीवनपर्यन्त एक परिवार के हो के नहीं रहते। पूज्य श्री

जन्म के परिवार की सीमाओं को तोड़कर बाहर आए और इस सम्पूर्ण वसुन्धरा को उन्होंने अपना कर्म क्षेत्र चुना और कर्म में लग गये।

पूज्य श्री तनासिंह जी में जो अपनत्व व आत्मीयता का भाव था, यही भाव पारिवारिक भाव है और यही पारिवारिक भाव परिवार को जोड़े रखता है। उनके साथ रहने वाले हर व्यक्ति ने इस पारिवारिक भाव को महसूस किया है। वे लोग भाग्यशाली हैं जिन्होंने उनके इस अपनत्व व आत्मीयता का साक्षात् अनुभव किया।

पूज्य श्री अपने परिवार के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत की बिगड़ी व्यवस्था को व्यवस्थित करने आये थे। पूज्य श्री के मार्गदर्शन व सान्निध्य में यह सांघिक परिवार फलने-फूलने लगा और उत्तरोतर विस्तार पाता जा रहा है।

संघर्षशील व परिश्रमी- पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन वृतान्त पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि वे जन्म से युवावस्था तक घोर आर्थिक विपन्नता में रहे। अबोध अवस्था में ही उनके सिर से विधाता ने पिता का साया छीन लिया। अबोध बालक तणेराज (पूज्य श्री) के खाने-पीने, खेलने व मौज-मस्ती के दिनों में कुदरती मार ने उन्हें पितृ छाया से वंचित कर ऐसा कहर ढाहा कि सारी परिस्थितियाँ ही बदल कर माँ-बेटे को ही अलग कर दिया। आर्थिक संकट से पार पाने के लिए, माँसा के लिए गाँव रामदेरिया में जाकर अपनी कृषि भूमि पर काश्त करवाना जरूरी हो गया था, साथ ही बालक तणेराज को शिक्षा की ओर अग्रसर करना आवश्यक समझकर बालक तणेराज को पढने के लिए बाड़मेर ही छोड़ माँसा को गाँव रामदेरिया में जाकर अपनी ढाणी में रहना पड़ा।

पूज्य श्री के जीवन की शुरुआत आर्थिक तंगाई व अभावों में हुई। बाड़मेर रहते पूज्य श्री को कष्टों भरी राहों से गुजरना पड़ा। बाड़मेर में रहते पूज्य श्री को हाथ से रोटी बनानी पड़ती थी जिसके कारण हाथ जल जाया करते थे, चक्की से आटा पीसना पड़ता था जिसके कारण उन नन्हें हाथों में छाले पड़ जाया करते थे। पूज्य श्री का यह विद्याध्ययन का सफर बड़ा ही कष्टप्रद व दर्दनाक था, इसके उपरान्त भी उन्होंने अपना विद्याध्ययन जारी रखा।

पूज्य श्री का बचपन आफतों, कष्टों, अभावों व आर्थिक तंगाई रूपी मकड़ी के जाल के चक्रव्यूह में झूलता रहा। उनकी ताकत, उनकी हिम्मत उनकी माँ थी, इसलिए माँसा के संरक्षण व मार्गदर्शन में इस चक्रव्यूह को तोड़ते गये और माँसा की प्रेरणा से आगे बढ़ते गये।

बाड़मेर में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने के बाद जोधपुर और फिर उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए पिलानी आकर्षण का केन्द्र बना। बिड़ला जी के शिक्षण संस्थान में अध्ययन करते निर्धन राजपूतों के जीवन की दर्द भरी दास्तान का श्रवण किया, उनकी व्यथा को महसूस किया। उन्होंने पाया कि धन की कठिनाई निर्धन राजपूतों के पढाई में आड़े आ रही है।

पूज्य श्री ने बताया कि-''हम तीन बन्धु खास बन्धुभाव रखते थे, क्योंकि हम तीनों पूरे धनहीन, दीन थे। रसोइये के खर्च को भी वहन नहीं कर पाने के लिए हाथ से ही रोटी बनाया करते थे, फिर भी पैसों की कमी पड़ती थी। मेरे दिल में निर्धनों के प्रति सहानुभूति जगी और उनके प्रति कुछ कर गुजरने की भावना प्रबल हुई। मैंने पैसों की कमी को पूरा करने के लिए यहाँ रहकर सुबह जल्दी उठने से लेकर रात्रि में सोने तक विभिन्न स्रोतों से कमाई की, पर मेरे सहपाठी बन्धुओं की सेवा में खपकर कुछ भी बचता नहीं था, आवश्यकताएँ सदैव भूखी ही रहती थी।''

पढने वाले बच्चे छुट्टियाँ होते ही सीधे घर दौड़े आते हैं पर पूज्य श्री ने छुट्टियों में भी और पढाई के सत्र में भी कमाई करना जारी रखा-

सुबह जल्दी उठकर जंगल से दातुन तोड़ कर छात्रावास के प्रत्येक कमरे में अन्य सभी छात्रों को देकर

कमाई की, प्रबन्धकारिणी समिति से अनुमति लेकर छात्रावास के मैदान में खाली पड़ी जमीन में सब्जियाँ लगाई व उन्हें बेचकर कमाई की, पुस्तकालय में नोकरी कर कमाई की, छोटी-मोटी बागवानी कर कमाई की, रात में दर्जी की दुकान पर जाकर सिलाई कर कमाई की, कमजोर विद्यार्थियों को पढाकर कमाई की तथा साथ में अपनी पढाई भी करना-कितना परिश्रम! इतना कड़ा संघर्ष व परिश्रम किसके लिए, उन आर्थिक तंगी से जूझ रहे सहपाठियों को शिक्षा की सुविधा प्रदान करने के लिए। उनका पूरा जीवन संघर्षशील रहा। वे संघर्ष से कभी थके नहीं और उन्होंने मुसीबतों का डटकर मुकाबला किया।

पूज्य श्री का विद्याध्ययन का सफर निसन्देह बड़ा कष्टप्रद व दर्दभरा था, पर यह कष्टप्रद व दर्दभरा सफर आगे जाकर उनके जीवन में बड़ा काम आया। जीवन में आने वाली इन कष्टभरी तकलीफों ने उन्हें मेहनती, परिश्रमी, कर्मठ, संघर्षशील व पुरुषार्थी बना डाला।

बाल्यकाल की तकलीफों और कठिनाइयों ने उन्हें इतना कष्ट सहिष्णु और धैर्यवान बना डाला कि आगे जीवन में कैसी भी विपरीत परिस्थितियाँ आयी, उनकी जड़ों को लेशमात्र भी हिला न सकी। हर विपरीत परिस्थिति में वे सदैव अडिग बने रहे। कोई भी परिस्थिति उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं कर पायी। यहीं से उनकी मजबूत नींव पड़ी। दुनिया में कर्मवीरों के लिए कोई भी वस्तु असम्भव नहीं है। श्रम ही वह कुंजी है जिससे श्रेय साधन के द्वार खुला करते हैं।

सहयोगी भाव- पूज्य श्री तनसिंह जी में सहयोगी भावना कूट-कूट कर भरी पड़ी थी इसलिए अपने को मिलने वाली छात्रवृत्ति भी अपने सहपाठी निर्धन कमलकान्त सिंह को देना और उसे इसका अहसास तक न होने दिया कि वह अपने को मिली छात्रवृति उन्हें दे रहे हैं। उन्हें तो यही बताया गया कि यह छात्रवृति एक धनी मित्र का गुप्त दान है।

पढाई के समय सह-पाठियों की चिन्ता, उनके अध्ययन हेतु खर्च की चिन्ता और इस चिन्ता के निराकरण के लिए उन्होंने दिन-रात परिश्रम किया। आर्थिक तंगी से जूझ रहे अपने निर्धन सहपाठियों की शिक्षा के लिए सुबह जल्दी उठने से लेकर रात्रि में सोने तक विभिन्न स्रोतों से कमाई की।

पूज्य श्री के एक निर्धन सहपाठी के माता-पिता का देहान्त हो गया। उसकी दयनीय स्थिति को देखकर उसकी पढाई के लिए पूज्य श्री ने अपनी पढाई छोड़कर नौकरी करने की ठान ली, पर छात्रावास के गृहपति ने उन्हें सलाह दी कि पढाई का तीसरा वर्ष पूर्ण हो चुका है, अब केवल एक ही वर्ष था बी.ए. में, इसलिए उन्हें बी.ए. कर लेना चाहिए। उसने पूज्य श्री को हिम्मत बंधाई और आर्थिक संकट के लिए सांत्वना दी।

पूज्य श्री फिर एक बार अपने हितों की, अपने सुखों की तिलांजलि देने जा रहे थे। उसी निर्धन सहपाठी के एक बहन थी, जिसके एक पैर में लकवा था और वह चिंतित था कि उसके लिए कोई वर न था। पूज्य श्री का उसकी सहानुभूति में हृदय भर आया। उन्होंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि वे उसी से शादी करेंगे, पर उनके दूसरे सहपाठी ने उन्हें मना कर दिया और कहा- ''हमारी जिन्दगी को इस प्रकार बरबाद करने का हमें कोई अधिकार नहीं है, यह जिन्दगी हमारी नहीं है और न इस पर हमारा एकाधिकार है। यह तो धरोहर है जिसे ठीक प्रकार रखना हमारा फर्ज है।''

पूज्य श्री ने अपने कई सहयोगियों को व्यापार में रोजगार मुहैया कराया, उन्हें व्यापार में पारंगत कर आत्मनिर्भर बनाया। अपने अनेकों सहयोगियों को कृषि व अन्य कार्यों जैसे- आई.टी.आई में डिप्लोमा करवाना आदि कार्यों में सहयोग देते देखा। पूज्य श्री अपने सहयोगियों से अत्यधिक प्रेम करते थे तभी तो उन्होंने उनके लिए परमात्मा से प्रार्थना की-

जल जल कर उठने वालों को,
दो मंगल वरदान, प्रभुजी दो मंगल वरदान।।

पूज्य श्री जहाँ भी रहे, उनके सम्पर्क में जो भी रहा, उनके दुःख-दर्द को दूर करने के लिए उनकी सारी शक्तियाँ स्वतः लग जाया करती थी। ऐसे व्यक्ति को क्या कहें-सन्त, योगी, महापुरुष या कर्मयोगी।

समष्टि भाव- समष्टि का अर्थ है समाज। पूज्य श्री तनसिंह जी समष्टि भाव अर्थात् सामाजिक भाव से परिपूर्ण थे। पूज्य श्री को छोटी उम्र में ही अहसास हो गया था कि समाज उनके लिए नहीं है अपितु वे समाज के लिए हैं। इस अहसास के कारण उनमें समाज (समष्टि) के प्रति आत्मीय भाव जग गया और उन्होंने अपना विद्याध्ययन, विवाह, नौकरी, कुटुम्ब पालन और जीवन के समस्त व्यापार समाज (समष्टि) के चरण वन्दना में समर्पित कर दिये। पूज्य श्री ने समाज में माँ भगवती के स्वरूप को देखा इसलिए समाज को माँ भगवती का स्वरूप मानकर जीवनपर्यन्त उसकी सेवा में लगे रहे और उन्होंने कहा-

''समाज सेवा का कार्य परमार्थपूर्ण है। हमें समाज कार्य ईश्वर के अर्पण करना चाहिए। अपने गुण स्वभावानुसार प्राकृतिक कर्मों को करने से ही हमें भगवत्प्राप्ति होती है, इसलिए समाज के कार्य को ईश्वर से पृथक नहीं करना चाहिए। समाज कार्य यदि भगवदर्थ किया जाता है, तो उससे भगवद् भक्ति का स्वरूप भी बनता है। समाज सेवा को ईश्वर प्राप्ति की साधना माना। समाज सेवा ही ईश्वर की आराधना है, यह माँ शक्ति से आशीर्वाद लेकर मैं समाज सेवा में जुट गया और अन्यों को भी इसमें जुटा दिया। समाज परम तत्व का मूर्त रूप है। अत: हम समाज की सेवा यह मानकर करें कि हमने हमारे आराध्य देव के चरणों में अपने ही जीवन का नेवैद्य चढ़ाया है। दृष्टिकोण के इस परिवर्तन से यदि विश्वात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध जुड़ जाता है, तो व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि के ताने-बाने के साथ हमारी साधना का उज्जवलतम रूप निखर आयेगा और यही होगा हमारी ध्येय साधना की अन्तिम मंजिल।''

पूज्य श्री चाहते तो सुखी गृहस्थ जीवन जी सकते थे और अपने परिवार के लिए आर्थिक समृद्धि का पुख्ता इन्तजाम कर सकते थे, पर उनके हृदय में तो समष्टि की भक्ति की अलख जगी हुई थी और जीवन पर्यन्त उसी समष्टि की भक्ति की लय में रमे रहे। इसीलिये वे नगरपालिका में अध्यक्ष रहते हुए काफी जमीन जुटा सकते थे पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। बाड़मेर में अपने मकान की भूमि भी दूसरों से खरीदी थी। उन्होंने अपने परिवार के लिए भी साधन सम्पत्ति नहीं जुटाई। उन्होंने तो सदैव समष्टि के हित में ही कार्य किया।

पूज्य श्री ने कहा-''समष्टि के विकास में यदि एक भी व्यक्ति असंस्कारी रह गया तो समष्टि के विकास का कोई अर्थ नहीं है। विश्वात्मा ने जिस समष्टि देह को धारण किया है, मैं उसका अविनाशी अणु हूँ। विश्वात्मा की सत्ता से पृथक अपनी सत्ता की कल्पना एक अवैज्ञानिक दर्शन है। ठीक उसी प्रकार मेरे अखण्ड जीवन के अस्तित्व बिना समष्टि जीवन की अखण्डता भी अकल्पनीय हो उठी।''

आध्यात्मिक- धन्य है वह वसुन्धरा-जिस पर पूज्य श्री तनसिंह जी जैसे योगी का अवतरण हुआ, धन्य है वो कौम जिसको उन्होंने अपना कर्म क्षेत्र चुना, धन्य है वे लोग जिन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ का रास्ता चुना। पूज्य श्री एक उच्च कोटि के योगी थे। उनका सारा जीवन आध्यात्मिकता से परिपूर्ण था।

हर व्यक्ति की अन्तिम मंजिल ईश्वर प्राप्ति है। जो साधक इस मंजिल तक नहीं पहुँचे, उन्हें वे मंजिल की ओर अग्रसर करते रहे। पूज्य श्री के मार्गदर्शन में साधक साधना पथ पर ज्यों-ज्यों विकास के स्तर पार करते गये त्यों-त्यों पूज्य श्री के विराट आध्यात्मिक जीवन की भी उन्हें नई-नई अनुभूतियाँ होती रही। एक साधक की साधना की चरमावस्था को पूज्य श्री ने इस तरह प्रगट किया-

''मधुवन की सी छाँहे मिल गई गीतों में बाँसुरियाँ घुल गई,

अब श्वासों की बाहों में श्वासें मिलन यामिनी घट-घट मिल गई,

अपने आपको बिसारा उसने जीवन को सँवारा थोड़ी देर से।''

अवतार- अवतार का अर्थ है नीचे उतरना। सब जगह परिपूर्ण रहने वाले सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा अपने अनन्य भक्तों की इच्छा पूरी करने के लिए अत्यधिक कृपा से एक स्थान विशेष में अवतार लेते हैं।

धर्म रक्षक, धर्म पालक, धर्म संवर्धक क्षत्रिय अपने प्रमाद व संस्कारहीनता के कारण सतोगुणीय भाव से गिरकर तमोगुण से आक्रान्त हो गया और अपनी संजीवनी शक्ति ''क्षात्र शक्ति'' को खो बैठा। क्षत्रिय की इस जड़ता जन्यविकृति से सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया, सारी व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो गयी। सामाजिक ढाँचे को दुरुस्त करने के लिए चैतन्य के रूप में पूज्य श्री तनसिंह जी का एक क्षत्रिय के घर में अवतरण हुआ। समय की मांग, सृष्टि की आवश्यकता और ईश्वर की चाह बनकर वे भारत भू-भाग में अवतरित हुए। साधारण आदमी जिस स्थिति पर है, उसी स्थिति पर आकर बिलकुल भोले-भाले साधारण व्यक्ति की तरह बनकर वे हम लोगों के बीच हमारे सामने आये और हमारी तरह ही बनकर हमें क्षात्र धर्म की शिक्षा देने लगे।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने बारे में बताया-

''मैं इतना ही साधारण आदमी हूँ, इतना ही साधारण मेरा जीवन है, इतनी ही साधारण मेरी आत्मकथा है और मैं चाहता भी यही हूँ कि ऐसा ही साधारण बना रहूँ। यदि मुझे विशिष्टता अपने अन्दर दिखाई देती है तो उसे अपनी परीक्षा मानता हूँ। वास्तविकता तो यही है कि मैं साधारणता ही पसन्द करता हूँ। यदि मुझे तुम कहीं ढूंढना चाहो, तो देख लेना-राजमहल की अपेक्षा किसी झोंपड़ी में अधिक प्रसन्नता-पूर्वक बैठा होऊंगा, यदि किसी समारोह में भी होऊंगा तो सबसे पीछे अकेला दिखाई दूंगा।

''मैं एक अत्यन्त साधारण आदमी हूँ और मैं यही चाहता हूँ कि लोग मुझे इसी रूप में जानें और जानते रहें ताकि दुनिया में यह सिद्ध हो सके कि साधारण लोगों की असाधारणता जब इस दुनिया में प्रगट होगी, तो संसार के बहुत बड़े चमकते हीरे उनके सामने बिलकुल फीके पड़ जायेंगे। इसके सिवाय मैं असाधारण बन के करूँगा ही क्या। जिन्हें मैंने अपने स्वप्न बताए और जिन्होंने अपने जीवन मुझे दिये, वे तो नीचे सोते रहे, तो मैं खाट पर सोने की विशिष्टता कर ही कैसे सकता हूँ। मैंने कठिनाई में और सुख में अपने बन्धुओं के साथ रहने का निश्चय किया है और क्योंकि अब तक मेरे बन्धु साधारण ही हैं इसलिए मैं भी साधारण बना रहना चाहता हूँ।''

पूज्य श्री तनसिंह जी एक अध्यात्म पुरुष थे, युगावतार थे। इस महामानव का जन्म इस समाज की विलक्षण उपलब्धि थी। पूज्य श्री जैसा व्यक्तित्व, सादा जीवन, उच्च विचार अन्यत्र मिलना अति मुश्किल है। वे ऐसे दिव्य प्रतिभावान व्यक्ति होते हुए भी उनका जीवन अत्यधिक सरल, निर्मल, साधारण रहा कि सामान्य जन उनको पहचान ही नहीं पाया। अनेक लोग जीवन भर उनके साथ रहे फिर भी उन्हें पहचान न सके, उन्हें पा न सके। हमारे लिए तो वे एक अबूझ पहेली ही बने रहे। सामान्य जन चाहे उन्हें पहचान न पाये लेकिन उन्होंने अपने को असाधारण अलौकिक एवं युगावतार होने का अनेकों जगह इंगित किया है, अनेक जगह संकेत भी दिये हैं-

मैं निर्झर हूँ पर्वत से बह गहरा नीचे तक आया हूँ।

पूज्य श्री यहाँ झरने के प्रतीक के रूप में अपने को प्रगट कर रहे हैं। मैं निर्झर हूँ अर्थात् सतत् बहने वाला, शाश्वत, अविनाशी, परमानन्द हूँ, बिना विराम

के निरंतर कर्मरत, नित्य व सदैव गतिमय बने रहने वाला अनादि हूँ। एक पर्वत जो उच्चस्थ स्थान पर है और दूसरी धरती जो निम्न स्तर पर है। उच्चतम स्थान परमात्मा का है और निम्न स्तर हम साधारण लोगों का है। हम क्षत्रिय ज्योंहि पथ विचलित, धर्म विस्मृत व कर्तव्य विमुख हुए त्योंहि हमारी सांसारिक पदार्थों में राग व आसक्ति बढ गई और साधारण लोगों के स्तर पर जा पहुँचे, तब पूज्य श्री तनसिंह जी तमोगुण से आक्रान्त क्षत्रिय समाज को सतोगुण की ओर उन्मुख करने के लिए क्षत्रिय समाज के साधारण लोग जिस स्तर पर थे, उसी स्तर पर आकर सद्गुरु के रूप में उन्हें क्षात्र धर्म की शिक्षा देने लगे।

''पगली धरती के आँचल को मैं तीर्थ बनाने आया हूँ।''

इस धरती पर पाप और अधर्म अधिक बढ गया, इसलिए विनाशाय च दुष्कृताम् अर्थात् दुष्टों का विनाश कर इस धरती को तीर्थ स्थल की तरह पवित्र और निर्मल बनाने हेतु मैं इस पर अवतरित हुआ हूँ। पागल दुनिया जो बिना ध्येय भागी जा रही है, उनको अपने धर्म, संस्कृति का ज्ञान कराने मैं इस धरती पर अवतरित हुआ हूँ।

मैं पत्थर का प्यार लिये, धरती तक उमड़ा आता हूँ।
जिनके शीश उठे ऊँचे, मैं उनकी विनय बहा लाता हूँ।

संसार में फैली नफरत और कटुता के बीच प्रेम बरसाने पूज्य श्री धरती पर अवतरित हुए। लोगों में फैली नफरत और कटुता की जगह आत्मीय भाव का संचार करने मैं धरती पर उतर आया हूँ।

जिनके शीश उठे ऊँचे-स्वधर्म, कर्तव्य पालन व क्षात्र धर्म का पालन करने वाले जो हमारे प्रेरणास्रोत हैं, उनकी विनयशीलता लेकर मैं स्वयं इस धरा पर आया हूँ।

पूज्य श्री अपने को इंगित करते कहते हैं-

''गुमराह हठीलों के प्रांगण में मैं अलख जगाने आया हूँ।''

क्षत्रिय समाज गुमराह है, रूढिग्रस्त जीवन जी रहा है, गलत रास्ते पर जा रहा है। बिना समझ के रूढिगत जीवन जीने वाले ऐसे अड़ियल पागलों को जो बिना ध्येय भागे जा रहे हैं, उनको धर्म, संस्कृति और कर्तव्य का ज्ञान कराने, उन गुमराह हठीलों के प्राँगण में अलख जगाने आया हूँ अर्थात् सुप्त क्षत्रिय समाज को जागृत करने आया हूँ। फिर अवतार होने का एक और संकेत देते हुए पूज्य श्री ने कहा -

हारे अर्जुन को कर्मयोग का पाठ पढाने आया हूँ।

महाभारत के युद्ध में दोनों सेनाओं के मध्य खड़ा अर्जुन अपनों को देख मोहग्रस्त हो गया और युद्ध न करने का निश्चय कर रथ के पिछले भाग पर जा बैठा। भीतर बैठे मोहग्रस्त शत्रु ने अर्जुन को हराया। ऐसे अर्जुन क्षत्रिय समाज में हम भी हैं जो अहंकार व मोह से ग्रस्त होकर निष्क्रिय होकर बैठे हैं। अकर्मण्यता व निष्क्रियता हमारे जीवन पर छा गयी। क्षत्रिय समाज ने बाहरी शत्रु पर तो हमेशा विजय हासिल की है, पर भीतरी शत्रु अहंकार, मोह, निज स्वार्थ से हार गया। ऐसी परिस्थिति में पूज्य श्री तनसिंह जी ''हारे अर्जुन'' यानी परास्त होकर निराश बैठे क्षत्रिय समाज के लोगों को निष्काम कर्म योग का पाठ पढाने हम लोगों के मध्य अवतरित हुए। फिर उन्होंने अपने आने का हेतु बताते हुए कहा-

''गाफिल तुमको अन्तर की मैं व्यथा बताने आया हूँ।''

दुष्टों का दलन व सज्जनों की रक्षा करने वाला क्षत्रिय अपना स्वाभाविक कर्तव्य भूल गया। वह भूल गया कि मै क्षत्रिय हूँ, मेरा भी कोई दायित्व है। उन्हें अपने स्वधर्म की भी कोई समझ नहीं रही। स्वाभिमानी क्षत्रिय की ऐसी क्षत अवस्था देख पूज्य का हृदय वेदना से भर गया। वे व्यथित हो उठे। तब ऐसे गाफिल, नासमझ को अपने अन्तर की व्यथा बताने वे क्षत्रिय समाज के बीच आये और अपनी व्यथा से रूबरू करा अनेकों को व्यथित कर गये, अपनी व्यथा दे गये। पूज्य श्री की व्यथा ही श्री क्षत्रिय युवक संघ है। फिर आगे इंगित करते हुए और कहा-

अपने तप की ले मशाल मैं ज्योति जगाता आता हूँ।

सुप्त क्षत्रिय समाज को पुनः क्षत्रियत्व का बोध कराने धरती पर आया हूँ और गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी ले मशाल उन्हें जागृत करने में कर्मरत हूँ।

मैं बनजारा हूँ कौन मेरा है साथी प्रीत मेरी शरमाती।
बालद लेकर चला युगों से, बन बन का मैं राही।।

पूज्य की तनसिंह जी ने यहाँ अपने को बनजारा के रूप में इंगित किया है। बनजारा अपने काम से चलता ही रहता है। उनका काम सतत् चलने का ही है। सतत् चलने वाला तो परमात्मा है। पूज्य श्री कहते हैं- मैं बनजारा हूँ मेरा स्वभाव ही सतत् चलने का है, मैं नित्य हूँ, सत्य हूँ। सत पथ पर चलने वाला तो बिरला ही होता है इसलिए वे कहते हैं-इनमें से मेरा कौन साथी है। समय की माँग और जगत की आवश्यकता पर बन-बन का राही बनकर मैं तो युगों-युगों से इस धरती पर आता रहा हूँ।

मैं सपनों की बहती सरिता, जिसका नहीं किनारा।
अनबोली भाषा का हूँ मैं, उलझा हुआ इशारा।।

पूज्य श्री तो वह सरिता है जिसका न ओर है और न छोर है अर्थात् आदि है, अनादि है, उन्हें कोई समझ नहीं पा रहा है। वे कहते हैं अनबोली भाषा का हूँ मैं उलझा हुआ इशारा, इसलिए मुझे कोई समझ नहीं पा रहा है। ऐसे रहस्यों की, अनुभूतियों की भाषा नहीं होती, भाषा से उसे नहीं समझ सकते।

पूज्य श्री ने अपने को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा-

देव योग से बना भिखारी,
व्यथा सामने रख दी सारी। ले ज्योति तज अन्धकार।।

पूज्य श्री यहाँ अपने को भिखारी इंगित कर कहते हैं-देव योग से बना भिखारी। कैसा भिखारी? भिखारी जिसका मात्र नाम है, गुण नहीं। जिसे किसी भी भौतिक पदार्थ की भीख की आकांक्षा नहीं है। वे तो अपना जीवन देकर बदले में सबका जीवन खरीदने वाले भिखारी हैं। वे अपनों से उनकी नेष्टताएँ-अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, आलस्य प्रमाद, दरिद्रता, दैन्यता, दुर्बलता, निष्क्रियता इत्यादि अवगुणों को माँगते हैं। वे अपनो से अनुनय करते हुए कहते हैं-अपने सारे तम के अन्धकार को मुझे भिक्षा के रूप में दे दो और बदले में 'ले ज्योति तज अन्धकार' अर्थात् ज्योति, प्रकाश, ज्ञान, प्रेम मुझसे ले लो।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने सबको सचेत करते हुए आगे कहा-

ऐसा भिक्षुक नहीं मिलेगा,
ऐसी अनुनय कौन करेगा। छिपा नहीं तू दे बलिहार ।।
दे दो! दे दो! मन भटक रहा है द्वार द्वार।
मेरी नन्हीं यह झोली तू दातार।।

ऐसा अनुनय करने वाला, ऐसा भिक्षुक फिर नहीं मिलेगा। अपने सारे तमोगुणीय भाव मेरी इस नन्हीं झोली में डाल और बदले में सतोगुणीय भाव (क्षत्रियत्व के भाव) ले, इसी भाव से हर द्वार पर दस्तक दे रहा हूँ।

आगे कहते हैं, इसीलिए तो-

''चला हूँ तभी तो मन्दिर जगाता।
पसीना बहाता राहें बनाता।।''

क्योंकि -

''जन्म जन्मों का मैं हूँ बिसाती।''

''किसको अन्तर का भेद बतायें, कैसे अपनों को अपना बताएँ,
कैसे धरती पे सपने सुलाएँ जब हों दुविधा की पाँख लगाए,
नीचे खड़े थाह लेनी ऊँचे गगन की।।

पूज्य श्री अपनी दुविधा प्रगट करते हुए कहते हैं- नीचे खड़ा क्या गगन की थाह ले सकता है। ये तो एक स्वप्न जैसी बात हो गयी, इससे आदर्श थोड़े ही साकार हो सकता है। पूज्य श्री को पूज्य श्री के स्तर का ही समझ सकता है, वो स्तर यहाँ है नहीं, यही पूज्य श्री की दुविधा है।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अनेक जगह अपने अवतार होने के संकेत दिये है, इंगित भी किया है, फिर भी उन्हें समझ नहीं सके, पहचान नहीं सके, पा न सके। यह विडम्बना नहीं तो और क्या?

पूज्य श्री तनसिंह जी कहते हैं-

''कुछ लोगों ने मुझे समझने का दावा किया है। मन ही मन मैं उन पर हँस पड़ता हूँ, क्योकि उन्होंने मेरा कुछ भी नहीं समझा है। जो मुझे बेचारा समझते हैं, उन्हें पता नहीं मैं अनन्त शक्ति का स्रोत और अनेक संकल्पों का जनक और पोषक हूँ। कुछ लोग मुझे निहायत अच्छा आदमी मानते हैं, पर वे नहीं जानते कि मैं कितना बुरा हूँ। कुछ लोग मुझे बुरा आदमी मानते हैं, पर उन्हें मालूम नहीं कि मैं कितना शरीफ, भला और नेक हूँ। कोई मुझे ढूंढना ही शुरू करे, पर्वतों की ऊँचाई से लेकर समुद्र की गहराई तक मैं हूँ। मैं न कुछ इच्छा करता हूँ और उत्कट अनुराग का आचरण करके भी भीतर सर्वथा निरासक्त और निस्पृह हूँ। मोह और निर्मोह का अजीब गोरख धंधा हूँ।

''मुझसे व्यवहार करने वाले यह नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, क्योंकि वे यह भी नहीं जानते कि वे कौन हैं। यदि वे जानते भी हैं तो विश्वास कतई नहीं करते और यही कारण है कि निकट सम्पर्क में होते हुए भी कईयों की गाड़ियाँ उबड़-खाबड़ ही चला करती हैं। कारण अनेक हो सकते हैं पर मुख्य कारण मूलधन का अभाव है। उनके प्रति ममता केवल तभी आती है, जब निरपेक्ष भाव से अनुराग उत्पन्न हो, अन्यथा अनुचित व्यवहार की निर्मम सजाएँ ही होती हैं।''

पूज्य श्री तनसिंह जी ने फिर कहा-

''कौन समझ पाया है मुझको,
मैं कैसी उलझन हूँ बतला।''

त्रेता में राम को किसने पहचाना। उस समय राजा-महाराजा बहुत थे, उनके पास सेना की भी कोई कमी नहीं थी। यदि राम को पहचान जाते तो भालुओं और बन्दरों (आदिवासियों) का सहयोग उन्हें नहीं लेना पड़ता। केकैयी ने यदि राम को पहचान लिया होता तो वे अपने पुत्र भरत के लिए राजसिंहासन और राम के लिए 14 वर्ष का वनवास नहीं माँगती। राम काल में राम को नहीं समझ पाये, तो कृष्ण काल में कृष्ण को भी कोई समझ नहीं पाये। बचपन से ही उन्हें मारने के एक के बाद एक न जाने कितने प्रयास किये गये और श्री कृष्ण को तो ग्वाले के सिवाय कुछ समझा ही नहीं। श्रीकृष्ण के द्वारकाधीश बनने के बाद उनका लोहा मानने लगे और उनसे भय भी खाते थे, फिर भी बड़े राजा महाराजा उन्हें छलिया ही कहते थे और जी जान से उन्हें मारने का प्रयास करते रहे। इसी तरह ईसा मसीह को पहचान लेते तो उन्हें क्रास पर क्यों लटकाते, सुकरात को जहर क्यों देते। हजरत मुहम्मद साहब को भी मारने का प्रयास कम नहीं हुआ। पूज्य श्री तनसिंह जी के भी अलोचक कम नहीं थे। उनके सामने पग-पग पर बाधाएँ खड़ी थी। पूज्य श्री हों और उन बाधाओं से पार पायें। उनके जीवन संग्राम में न जाने कितने चक्रव्यूह आए, पर हर चक्रव्यूह का उन्होंने अपने अदम्य साहस, शौर्य तथा धीरज के साथ नैतिक बल (आत्मिक बल) द्वारा भेदन करके जीवन पर्यन्त अपने लक्ष्य के प्रति सच्चे व निष्ठावान बने रहे। उन्होंने अपने सिद्धान्तों के साथ कोई समझौता नहीं किया।

इतिहास इस बात का गवाह है कि ऐसे महापुरुष की पहचान सदियाँ बीत जाने के बाद ही होती है। ज्यों-ज्यों समय बीतता है त्यों-त्यों अंधेरा घटता जाता है और एक समय आता है, जब आने वाली पीढियाँ सदियों बाद उनका सही मूल्यांकन कर पाती हैं, तब ऐसे महापुरुषों की आराधना-अर्चना होने लगती है और वे जनमानस के प्रेरणा के स्रोत बनते हैं, तो पूज्य श्री तनसिंहजी की भी पहचान सदियों बाद ही आने वाली पीढियाँ करेगी। एक दिन ऐसा आया, वे जन-जन के आराध्य होंगे और उनकी अर्चना की जायेगी। पूज्य श्री की इन पंक्तियों से हम समझ सकते हैं-

''कभी आयेगा निश्चित सवेरा धीरज मेरा है केवल सहारा।
कभी पुष्पों से थाली भरेगी, दुनिया आयेगी अर्चन करेगी।''

(शेष पृष्ठ 28 पर)

माँ

– जागृति कंवर हरदासकाबास

अनोखा रिश्ता है माँ-बेटी का। कहते हैं कि माँ भगवान का दूसरा रूप है। परन्तु मैं भगवान के बराबर माँ को मानती हूँ। हम भगवान की पूजा-अर्चना करते हैं। पत्थर को भगवान मानकर उसकी पूजा करते हैं। तो भी वे दर्शन नहीं देते। और माँ, जिसके सामने हाथ जोड़कर थोड़ा-सा झुकते हैं तो माँ आशीर्वाद का ढेर लगा देती है।

मेरी भी माँ (पू. तनसिंह जी की धर्मपत्नी) थी। अब वे स्वर्ग सिधार गई, लेकिन मेरे लिए तो आज भी वे मेरे साथ ही है। संस्कारों के रूप में मेरे साथ है। उनकी देह मेरे साथ नहीं, पर उनके विचार, उनका प्यार, उनकी प्रेरणा, सहनशीलता, उनकी क्षमा, उनकी मुस्कराहट, उनके अनगिनत संस्कार मेरे पास हैं।

मेरी माँ सुन्दरता की खान थी। सरल स्वभाव की वे खान थी। मैं तो उनकी बेटी हूँ क्या लिखूं? मेरे शब्द तो बहुत कम पड़ रहे हैं। वे तो मेरे लिए देवी-देवता से भी बढ़कर थी। मेरी हर खुशी के पीछे उनका आशीर्वाद था। वे कहती थी, जड़ु, मैंने तेरे लिए, तेरे उस कार्य के लिए जोगमाया को मनाया तभी तेरा वह कार्य सिद्ध हुआ। मेरे लिए तो माँ जोगमाया से भी बढ़कर थी। मेरा स्वभाव शुरू से ही मजाकिया है। मैं मजाक में उन्हें कुछ कह देती तो वे इतनी सुन्दरता से हँसती कि, मैं देखती ही रहती। उन पर गुस्सा करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं। दवाई लेने का या अस्पताल जाने का होता तो वे हंसकर कहती-माऊ मोता पंडमा आया रा। (माँसा मेरे शरीर में आ गये)। 96 वर्ष की थी पर अपने पहीर की ही भाषा बोला करती थी। मैं मजाक में कहती- मेरे जीसा के घर का अन्न खाती हो और बोली अभी भी अपने पीहर की बोलती हो। तब वे कहती- पीहर के तो पेड़-पौधे भी अच्छे लगते हैं, यह तो मेरी भाषा है।

मैं पिछली 23 जनवरी को उनसे मिलने सिवाना गई। 25 जनवरी को पूज्य जीसा की जन्म जयन्ती उनके जन्म स्थान बेरसियाला में मना रहे थे। सिवाना से भैया वगैराह उसमें जा रहे थे। मुझे भी माँ ने कहा,-तू भी जाकर आ। मैं 25 जनवरी को सुबह बैरसियाला जाकर रात को वापिस आ गई। 1 फरवरी को मैं वापस गांधीनगर आ गई। माँ ठीक थी। सिवाना से रवाना होते समय उन्होंने मुझे पूछा-वापिस कब आयेगी? मैंने कहा-10 दिन बाद, शिविर पूरा करके आ जाऊंगी। 3 फरवरी को तो फोन पर बात करी, ठीक थे। 4 फरवरी को तो मेरी माँ हम सबको छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। ग्यारह महिने हो गए हैं, अब भी मॉ की याद हमेशा सताती है। यह कैसा रिश्ता है माँ-बेटी का। मैं भाग्यशाली हूँ कि उनकी कोख से मुझे जन्म मिला। माँ जन्म देती है, पाल पोष कर बड़ा करती है और 20 साल की होने पर अपने जिगर के टुकड़े को सहर्ष अपने से अलग कर देती है, वह माँ है।

वे कहती थी- जब तू मेरे गर्भ में थी तब तेरे जीसा बैर का थान जा रहे थे। जाने से पहले मुझसे कहा-'बैर का थान जा रहा हूँ। हमारी आने वाली संतान यदि बेटी आई और तुम लोगों ने उसे दूध-पीती कर दी तो इस घर का पानी भी नहीं पिऊंगा, घर में कदम तक नहीं रखूँगा।' और जब तेरा जन्म हुआ, मैंने माँ से कहा-इसे घूंटी दे दो। वे थोड़े से नाराज दिख रहे थे। उन्होंने कहा,-पहले एक संतान पुत्री है और यह दूसरी आ गई। उन्होंने घूंटी देने से मना कर दिया। मैंने भी दो दिन तक इंतजार किया। दूसरे दिन तुझे हल्का-सा बुखार हो गया। मैं डर गई, कहीं यह मर गई तो इसके पिता इस घर का पानी तक नहीं पिएंगे, घर में कदम तक नहीं रखेंगे। मैं झट से उठी, घूंटी बनाई, तुझे

पिलाई। वैर की धणियाणी से हाथ जोड़ अर्ज ही-माँ इसे ठीक कर दो। तेरा बुखार उतरा तब मेरी जान में जान आई।

मुझे यह बात मालूम हुई तो मैं मेरी प्यारी माँ को छेड़ने के लिए धमकी देती-आज मैं जिन्दा हूँ तो मेरे जीसा के प्रताप से, आप तो मुझे रवाना कर देती। तब वे हंसकर कहती-नहीं रे, मैं ऐसा कभी नहीं करती। आज शरीर रूप से वे मेरे साथ नहीं हैं, पर उनकी मीठी-मीठी यादें मेरे नेत्रों में बह रही हैं।

मेरी माँ बहुत ही सीधी-सादी थी। वे दिलेर भी थी। कोई भी घर में आता तो उसको खाना खिलाना, चाय पिलाना, सीख देना आदि अचूक रूप से करती थी। वे भोली तो थी ही, कभी झूठ बोलना उन्हें आता ही नहीं था। कभी झूठ बोलने का प्रयास करती तो हम बच्चे उनके चेहरे को देखकर कहते-माँ आपको तो झूठ बोलना आता ही नहीं। मेरे दादीसा का स्वभाव तेज होने के कारण माँ हमेशा घूंघट में ही रहती। कभी साड़ी का पहला नीचे गिर जाता है तो कहती-अरे मुझे साड़ी ओढा दो, कोई आ जाएगा तो क्या कहेगा। कहेगा कि वह तो माँ की बहुआरी है। (वह तो मोती कंवर की बहू है)। माँ स्वभाव से कम बोलने वाली थी। कहती-बाड़मेर पीछे रह गया, कुटुम्ब-कबीला पीछे रह गया, किससे बात करूँ। कभी-कभी जीसा के बारे में मैं पूछती तो इस उम्र में भी शर्मा जाती। फिर धीरे-धीरे उनके बारे में बताती।

पहले उनके पीहर वाले पाकिस्तान में रहते थे। वे पाकिस्तान छोड़कर 10-15 साल से यहाँ सिवाना में रहने आ गए। तब से वे और भी प्रसन्न रहने लगी थी। हालांकि सभी रामदेरिया से सिवाना रहने आ गए थे। फिर भी माँ का मन हमेशा बाड़मेर, दांता, रामदेरिया के लिए मुरझा हुआ रहता। वे अपने परिवार से बहुत ही स्नेह करती थी। अपने परिवारजनों को थोड़े-थोड़े दिनों से याद करती रहती थी। देवीसिंह, रामसिंह के लिए कहती-घणा दिन हुआ देवो, रामो आया ही कोनी और उन्हें समाचार कहलवाकर बुलाती थी।

माँ तो माँ ही होती है। माँ की जगह भगवान भी नहीं ले सकते, ऐसा माँ महसूस करवा देती है। जब मैं सिवाना जाती, कुछ दिन रहकर वापिस घर जाने की कहती तो माँ कहती-बेटी कब तक पीहर में रहेगी? ठीक है, तू अब जा सकती है, पर यह बता वापिस कब आयेगी? मैं कहती-माँ आज जा रही हूँ, फिर आप जब कहेंगे तब वापिस आ जाऊँगी। जब तक मैं वापस नहीं जाती, तब तक वे छोटी-छोटी आँखें मेरा इन्तजार किया करती। आज न तो वे आँखें हैं, न वह मुस्कराता हुआ चेहरा, जिसे देखकर मेरा मन मयूर की तरह नाच उठता था। अभी वह हर जगह सूनी-सूनी लग रही है।

मेरी माँ एक बात स्वयं के लिए कहा करती थी। वे कहती,-जब मेरा जन्म हुआ तो पंडित ने जन्म कुण्डली बनाई। उसने कहा-राणसिंह जी! आपकी पुत्री भाग्यशाली है। इनके हाथ में छः अंगुलियाँ हैं। इस छठी अंगुली को कभी कटवाना नहीं। माँ कहती थी कि उसके बाद उनके भाई का जन्म हुआ। उनसे एक बहन थी। भाई के जन्म के बाद मेरे नानीसा का देहान्त हो गया। माँ की काकीसा ने माँ और छोटे भाई को पाल-पोष कर बड़ा किया। माँ कहती थी-लोग भी मुझे भाग्यशाली कहते थे, पर मैं सोचती मेरी माँ तो चल बसी, यह कैसा भाग्य? लेकिन यह घर और तुम्हारे पिता को पाकर मैं अवश्य भाग्यशाली लग रही हूँ। अब उस पंडित जी का शब्द 'भाग्यशाली' समझ में आया।

मैं भी भाग्यशाली हूँ कि तेरी कोख से मुझे जन्म मिला। माँ तुझे शत्-शत् प्रणाम। पू. तनसिंहजी जैसे पिता मिले, मेरा भाग्य दुगणित हो गया। माता-पिता को शत्-शत् नमन।

●

जो कुछ आँखों से नहीं दिखता, उसे चरित्र द्वारा देखना पड़ता है। – विमल मित्र

गतांक से आगे

बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास

– खींवसिंह सुलताना

राव कल्याणमल

राव कल्याणमल का जन्म राव जैतसी की सोढ़ी रानी कश्मीर दे के गर्भ से वि.सं. 1575 को हुआ था। राव मालदेव द्वारा बीकानेर पर अधिकार कर लेने पर राव कल्याणमल सिरसा चले गए। वहाँ रहकर उन्होंने अपनी शक्ति बढ़ाकर पुन: बीकानेर प्राप्त करने को उद्योग करने लगे।

शेरशाह का मालदेव पर आक्रमण व कल्याणमल का बीकानेर प्राप्त करना :– राव मालदेव की बढ़ती शक्ति को अपने लिए खतरा समझते हुए दिल्ली के सुल्तान शेरशाह ने मालदेव पर आक्रमण किया। राज्य प्राप्ति की इच्छा में राव कल्याणमल ने अपने पूर्वजों के विपरीत आचरण करते हुए मुस्लिमों का साथ देते हुए शेरशाह से जा मिला। शेरशाह की कुटनीति में आकर राव मालदेव अपने ही सरदारों पर झूठा संदेह कर बैठा और अपनी अधिकांश सेना सहित पीछे हट गया। जोधपुर के सेनानायक जैता व कूंपा अपनी थोड़ी-सी सेना के साथ लड़ते हुए, शेरशाह को भारी नुकसान पहुँचाते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए। इस युद्ध में हुए भारी नुकसान के कारण शेरशाह को कहना पड़ा कि- 'मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की सल्तन्त खो बैठता।' इस युद्ध के बाद राव कल्याणमल को बीकानेर का राज्य वापिस मिल गया।

जयमल की सहायतार्थ सेना भेजना :– वीरमदेव के बाद जयमल मेड़ता के शासक बने। राव मालदेव ने किसी कारण से नाराज होकर जयमल पर चढ़ाई कर दी। तब जयमल ने राव कल्याणमल से सहायता माँगी। इस पर राव कल्याणमल ने महाजन के ठाकुर अर्जुन सिंह, चाचाबाद के स्वामी वणीर, जैतपुर के किशन सिंह आदि सरदारों के नेतृत्व में अपनी सेना भेजी। बीकानेर की सेना के आने से जयमल की शक्ति बहुत बढ़ गई। जयमल की सेना ने जोधपुर की सेना पर प्रबल आक्रमण किया। जोधपुर की सेना जयमल का सामना नहीं कर पाई व युद्ध मैदान से भाग खड़ी हुई।

कल्याणमल का नागौर में अकबर से मिलना:– बादशाह बनने के कुछ वर्ष बाद जब अकबर अजमेर दरगाह आया तब वह नागौर में रुका। मुगलों के बढ़ते प्रभाव के कारण कई राजा वहाँ उससे मैत्री सम्बन्ध बनाने पहुँचे। अपनी वंश परम्परा के विपरीत कल्याणमल ने भी वहाँ जाकर उसकी बादशाहत स्वीकार की व अपने पुत्र कुंवर रायसिंह को बादशाह के साथ कर दिया।

राव कल्याणमल की मृत्यु :– राव कल्याणमल की मृत्यु वि.सं. 1630 में बीकानेर में हुई। राव कल्याणमल का जीवन संघर्ष में ही बीता। वह प्रजा के कल्याण के लिए सदैव प्रयासरत रहते।

महाराजा रायसिंह

महाराजा रायसिंह का जन्म वि.स. 1598 में हुआ था। राव कल्याणमल के स्वर्गवास के बाद वि.सं. 1630 में यह बीकानेर के शासक बने।

अकबर का रायसिंह को जोधपुर देना :– राव मालदेव की मृत्यु के बाद उनका योग्य पुत्र चन्द्रसेन जोधपुर की गद्दी पर बैठा। उस समय अधिकांश शासकों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी परन्तु चन्द्रसेन को, जो कि स्वतन्त्रताप्रेमी व स्वाभिमानी था, यह स्वीकार नहीं था। इस कारण से जोधपुर पर लगातार मुगल आक्रमण होने लगे, जिसके कारण राव चंद्रसेन को जोधपुर छोड़ना पड़ा। अकबर ने जोधपुर का शासन प्रबन्ध रायसिंह को दे दिया।

रायसिंह की इब्राहिम हुसैन मिर्जा पर चढाई:– अकबर के शासनकाल में गुजरात में मिर्जा बन्धुओं ने उपद्रव खड़ा कर दिया था। इस उपद्रवकारियों का नेता इब्राहिम हुसैन मिर्जा था। इब्राहिम हुसैन मिर्जा जालौर पर अधिकार करता हुआ नागौर पहुँचा, जहाँ रायसिंह से परास्त होकर पंजाब की ओर भाग गया। पंजाब से वह फिर से गुजरात जाकर उपद्रव करने लगा, अकबर की सेना का नेतृत्व रायसिंह ने किया। युद्ध में रायसिंह ने अपूर्व वीरता दिखलाई, युद्ध में मिर्जा मारा गया।

रायसिंह को मानसिंह सहायतार्थ काबुल भेजा जाना :– अकबर के सौतेले भाई हकीम मिर्जा जो कि काबुल का शासक था, ने 1581 में अकबर से विद्रोह कर भारत पर आक्रमण के लिए बढ़ा। आमेर के मानसिंह को उसे रोकने के लिए भेजा गया, मानसिंह की सहायता के लिए रायसिंह को भेजा गया। हकीम मिर्जा व मानसिंह के नेतृत्व में मुगल सेना में युद्ध हुआ। मानसिंह व रायसिंह के युद्ध कौशल के कारण हकीम मिर्जा की सेना को भागना पड़ा, हकीम मिर्जा को बन्दी बना लिया गया।

बीकानेर का नया किला 'जूनागढ़' बनवाना:– वि.सं.1645 में वर्तमान दुर्ग की नींव रखी गई। वि.सं. 1650 में गढ़ बनकर तैयार हुआ। गढ़ का निर्माण कार्य मंत्री कर्मचन्द्र की देख-रेख में हुआ।

अकबर की रायसिंह से अप्रसन्नता :– अपने शासनकाल के दौरान एक बार रायसिंह भटनेर ठहरे हुए थे। वहाँ पर अकबर के श्वसुर नसीर खां ने एक गरीब युवती के साथ छेड़-छाड़ की, इस घटना का जब रायसिंह को पता चला तो उन्होंने अपने एक विश्वासपात्र सहयोगी तेजसिंह से नसीर खाँ को दण्डस्वरूप पिटवाया। अकबर को जब इस घटना का पता चला तो उसने रायसिंह से तेजसिंह को उसे सौंप देने को कहा, परन्तु रायसिंह ने उसकी यह बात नहीं मानी जिसके कारण अकबर काफी समय तक रायसिंह से अप्रसन्न रहा। किन्तु रायसिंह के युद्धकौशल, शासन प्रबन्ध की कुशलता के कारण अकबर ने उन्हें सोरठ (सौराष्ट्र) की जागीर प्रदान कर दक्षिण में भेजा।

रायसिंह के पुत्र कुंवर दलपत सिंह का बागी होना :– मंत्री कर्मचन्द की शह पाकर कुंवर दलपतसिंह ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। रायसिंह उस समय दिल्ली में थे। दलपतसिंह ने बीकानेर पर चढाई की। किले में मौजूद थोड़े से राजपूत सरदारों ने उसका प्रतिरोध किया परन्तु वे परास्त हुए और दलपतसिंह का बीकानेर पर अधिकार हो गया। उसके बाद दलपतसिंह ने सिरसा पर आक्रमण किया जहाँ मुगल सुबेदार जाविद खाँ शासन कर रहा था। दलपतसिंह ने उसे परास्त कर सिरसा पर अधिकार कर लिया। इस पर अकबर ने एक विशाल सेना को दलपतसिंह के विरुद्ध भेजा। युद्ध के दौरान दलपतसिंह को बन्दी बना लिया गया।

रायसिंह की मृत्यु :– दक्षिण में नियुक्ति के दौरान रायसिंह गंभीर रूप से बीमार पड़ गये। बीमारी के कारण वि.सं. 1668 में बुरहानपुर में उनका निधन हो गया। आमेर के मानसिंह के जैसे रायसिंह भी मुगल साम्राज्य का मुख्य स्तम्भ था। गुजरात, काबुल व दक्षिण में उसने शाही सेना का कुशल नेतृत्व किया और सभी युद्धों में विजय प्राप्त की।

रायसिंह साहित्यानुरागी थे। उनके दरबार में संस्कृत व डिंगल दोनों भाषाओं के विद्वान आश्रय पाते थे। उन्होंने स्वयं भी 'रायसिंह महोत्सव व ज्योतिष रत्नाकर' नामक ग्रंथ लिखे। ख्यातों में रायसिंह की दानशीलता का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। मुंशी देवीप्रसाद ने रायसिंह की दानशीलता के कारण उन्हें 'राजस्थान का कर्ण' भी कहा है।

(क्रमशः)

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

खरवा का बीरबल

राव गोपाल सिंह के पास हरदम रहने वाले सभासदों में कुछ व्यक्ति अद्‌भुत प्रतिभा सम्पन्न थे। उनका यहाँ उल्लेख न करना उस समय के खरवा इतिहास के चमकते नगों को विस्मृति की परतों के नीचे दबा देने तुल्य होगा। वे लोग किसी ऐसी महाविद्यालय या शिक्षण संस्था के स्नातक नहीं थे। किसी बड़े महाराजा के राज दरबार में रहकर वहाँ के उच्चस्तरीय वातावरण में पालित पोषित नहीं हुए थे। जिनका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है, उनमें से कुछ तो शायद हस्ताक्षर करना भी नहीं जानते थे। परन्तु वे सभाचतुर, नीतिनिपुण, श्रेष्ठ वक्ता, कार्यसाधक, जोड़-तोड़ बैठाने में दक्ष और अनेक गुणों से अलंकृत थे। उनमें था एक उस युग का खरवा राजदरबार का बीरबल। वह खरवा क्षेत्र के गाँव (सारणियां) के जागीरदार का पुत्र कविया चण्डीदान था। चारणों की कविया शाखा में उत्पन्न चण्डीदान अपनी वाकचातुरी, हाजिर जवाबी, मस्खरापन और प्रत्युत्तर मति के लिए अजमेरा के इस्तमरारी ठिकानों में खूब जाना-माना व्यक्ति था। मसूदा के राव बहादुरसिंह तो उसे ही खरवा का बीरबल कहकर ही सम्बोधित करते थे। वन भ्रमण व शिकार के अवसर पर जब खरवा व मसूदा के राव एकत्रित होते तब चण्डीदान के हास्य चुटकलों को सुनकर बड़े प्रसन्न होते थे, साथ ही वे उसकी वाक् चातुरी से सतर्क भी रहते थे कि वह कहीं उनकी किसी अटपटी बात पर हास्यपूर्ण व्यंग प्रहार न कर बैठे। उस समय में वहाँ के ठिकानों में उसकी जोड़ का हाजिर जवाबी और प्रत्युत्पन्नमति कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। उसके पिता का नाम बांकीदान और दादा का नाम रामदान था। चण्डीदान के संतान नहीं थी, किन्तु सारणियां गाँव वि.सं. 1981 तक उसके भाईयों के अधिकार में बना रहा था। तदोपरान्त अल्पकाल में ही वे सब नि:संतान ही चल बसे। सारणियां में सन् 1960 ई. तक कवियों की हवेली और कोटड़ी जन-शून्य, जीर्ण-शीर्ण अवस्था में उनकी स्मृति को अपनी गोद में समेटे खड़ी थी। मुगल सम्राट अकबर के दरबारी बीरबल के चुटकुलों की भाँति चण्डीदान के चुटकुले आज भी खरवा के वृद्धजनों के मुख से सुने जा सकते हैं। वे भाग्यशाली उन्हें सुनाकर उन बीते सुनहरे दिनों को याद किया करते हैं। बीरबल की भाँति खरवा का वह बीरबल भी आज नहीं है, किन्तु उसकी स्मृति काल की परतों के नीचे दबकर भी आज विद्यमान है। शूरमां व कवि दोनों ही कालजयी होते हैं।

राजपुरोहित मोड़ सिंह

पुरोहित मोड़सिंह खरवा राजघराने के राज पुरोहित थे। पढ़े-लिखे साधारण, बिल्कुल छठी सातवीं कक्षा तक। परन्तु गजब की स्मरण शक्ति और वाकचातुरी प्रभु ने उन्हें दी। पुरानी ख्यातों और बातों के जानकार, सभाचतुर, हर विषय पर विशेषज्ञ की भाँति बोलने वाले, देश की तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों के दृष्टा व समीक्षक और ठिकाने में चलते रहने वाले प्रपंचों में दिलचस्पी लेने वाले थे पुरोहित मोड़सिंह। भारत सेवा संघ के अध्यक्ष रामनारायण चौधरी ने अपनी पुस्तक ''वर्तमान राजस्थान'' में पुरोहित मोड़सिंह खरवा के सम्बन्ध में लिखा है कि वे राव गोपालसिंह के विश्वस्थ आदमी थे। पथिक जी के पुराने साथी व सहयोगी थे। बहुत कम पढ़े-लिखे, परन्तु बड़े साहसी और होशियार थे। दरअसल बेगूं किसान आन्दोलन की

जाजम शुरू में उन्होंने ही जमायी थी। बिजोलिया किसान आन्दोलन की भांति बेगूं ठिकाने के किसानों ने भी आन्दोलन किया था। उसके प्रथम संचालक के रूप में पु. मोड़सिंह ने ख्याति प्राप्त की थी। अपने समय के वे ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें खरवा राजघराने की पिछली कई पीढ़ियों का दन्तकथाएँ-मिश्रित इतिहास ज्ञात था।

प्रथम भेंट में ही आगन्तुक व्यक्ति पर अपनी बुद्धिमता और कार्यकुशलता की छाप डालने में वे माहिर थे। जिन्दादिली उनमें कूट-कूट कर भरी थी। अपनी अस्सी वर्ष की अवस्था में भी वे कभी गम्भीर तथा उदास नहीं देखे गए। वे बालकों के साथ बालक, जवानों के साथ जवान, वृद्धों में वृद्ध और सन्यासियों में सन्यासी थे। पाली (मारवाड़) जिले की राजपुरोहित सभा के मानीता अध्यक्ष थे। जीवन के अन्तिम वर्षों में अपने उन्हीं अद्भुत गुणों और कार्यकलापों के कारण जोधपुर के तत्कालीन महाराजा हनुवन्तसिंह तक उनकी पहुँच हो गई थी। महाराजा ने प्रसन्न होकर भ्रमणार्थ उन्हें एक जीप (Jeep) प्रदान की थी। खरवे का (पिछले शासकों का) इतिहास तैयार करने में उनसे सुनी हुई परम्परागत अनेक बातों से लेखक को काफी सहायता मिली थी, जिसके लिए उनका आभार व्यक्त करना आवश्यक है। 88 वर्ष की दीर्घायु प्राप्त करके 6 अप्रैल सन् 1961 में उस ज्ञानी व बहुश्रुत पुरोहित मोड़सिंह का देहान्त हो गया था।

ठा. मोड़सिंह भवानीपुरा

भवानीपुरा के जागीरदार ठा. मोड़सिंह जी सम्बन्ध में राव गोपालसिंह के निकटस्थ चाचा होते थे। राव गोपालसिंह के प्रपितामह राव रामसिंह के लघु भ्राता श्यामसिंह के पुत्र देवीसिंह के मोड़सिंह पुत्र थे। खरवा के क्षत्रियोचित वातावरण में पले-पोषे मोड़सिंह घुड़सवारी और शस्त्र संचालन में पूर्ण दक्ष थे। अपने पूर्व पुरुषों में विरासत में प्राप्त वीरता, निडरता और साहस आदि गुण उनमें मौजूद थे। स्वभाव से तेज मिजाज और क्रोधी होने के बावजूद उनकी क्षत्रियोचित उदारता उललेखनीय है। राव गोपालसिंह के पूर्ण विश्वास पात्र थे। उनके क्रान्तिकारी कार्यों में छाया की भाँति वे राव साहब के साथ बने रहे। टाड्गढ़ की नजरबन्दी के बाद फरारी अवस्था में भी वही उनके साथ थे। सलेमाबाद के मन्दिर में अंग्रेज सेना द्वारा घेर लिए जाने पर वह राव गोपालसिंह के साथ इस स्वातन्त्रय जंग में प्राणों की आहुति देनें को भी मौजूद थे। इस प्रकार मोड़सिंह विपत्ति काल में हरदम उनके साथ बने रहे। वास्तव में वे एक वीर राजपूत थे। उनके पुत्र लक्ष्मणसिंह का अधिकांश जीवन फरारी अवस्था में बीता था।

भूरामल मुणोत

राव गोपाल सिंह के निजी सचिव भूरामल मुणोत ओसवाल जैन थे। उनके पूर्वज खरवा राज्य के संस्थापक राव सकतसिंह (शक्तिसिंह) के साथ जोधपुर से आए थे। भूरामल बहुत अच्छे लेखक, दरबारी रीति-रिवाजों के सुज्ञाता और अहलकारी गुणों से युक्त व्यक्ति थे। राजनीतिक प्रपंचों में पुरोहित मोड़सिंह के साथ उनकी प्रतिद्वन्द्विता प्रायः चलती रहती थी। उनकी लेखन शैली में विषय को प्रस्तुत और स्पष्ट करने की अद्भुत योग्यता थी। राव गोपालसिंह की दैनिक दिनचर्या व प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं का विश्लेषण वे बड़े ही रोचक शब्दों में अंकित किया करते थे। आकाश में छाए बादल, धूप, सर्दी, वर्षा, रहने के स्थान, समय आदि का वर्णन और घटित मुख्य घटना की विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण बड़े ही सुन्दर व सुस्पष्ट शब्दों में लिखा करते थे। मिलने आने वाले व्यक्ति की कैसी ख्याति थी? क्या महत्त्व था? राव गोपालसिंह के साथ उनका कैसा सम्बन्ध था? आदि बातों का सार रूप में वर्णन करने में ने सिद्धहस्त थे। उन्हें खरवा दरबार का दूसरा नैणसी कह सकते हैं।

रमैय्यालाल माथुर

रमैय्यालाल माथुर वास्तव में एक विद्वत्-रत्न थे। संस्कृत, हिन्दी, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं के सुज्ञाता विद्वान थे। उनके पूर्वज भी जोधपुर से ही राव सकतसिंह के साथ खरवा आए थे। इसी हेतु उनकी स्वामीभक्ति खरवा राजघराने के प्रति अजमेर चले जाने के बाद भी यथावत बनी रही। राव गोपालसिंह ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें अजमेर से बुलाकर अपने मुख्य सचिव के पद पर प्रतिष्ठित किया था। वे मिसनसार व मृदुभाषी थे।

पद्मसिंह भाटी व भवाना भील

तलवार के वार से बघेरा (Panther) मारने वाले एक राजपूत का उल्लेख करना भी रोचक और आवश्यक है। मेवाड़ राज्य के कुरावड़ ठिकाने से पद्मसिंह भाटी खरवा आए थे। एक समय पर्वतीय क्षेत्र में आयोजित हाके की शिकार में गोली लगने से घायल हुए बघेरे ने पलटकर हाका लगाने वाले पर हमला कर दिया। भवाना भील जो खरवा के शिकारी भीलों में प्रमुख था, घायल बघेरे की चपेट में आ गया। भवाना ने हिम्मत करके बघेरे के दोनों अगले पंजे दृढ़ता से पकड़ लिए। उसकी जान को जोखिम में देखकर हाके में शामिल पद्मसिंह भाटी आगे बढ़ा और अपनी तलवार के एक ही प्रहार से बघेरे के दो टुकड़े कर दिए। इस प्रकार एक वीर भील शिकारी की जान मेवाड़ के उस वीर भाटी राजपूत ने बचा ली। राव गोपालसिंह उसके साहस और शौर्य से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे खरवा कस्बा की उपजाऊ कृषि भूमि जागीर में प्रदान की और अपने प्रतिष्ठित जागीरदारों में उसे भी ससम्मान स्थान दिया।

इसके अलावा जमोला (मसूदा) के गजसिंह जगमालोत मेड़तिया, उनके छोटे भाई नाथूसिंह (जो बाद में देवलियाकलां के दीवान हुए), खारी बारैठान (मारवाड़) के बारहठ भूरदान, ततारपुर के सवाईसिंह मेड़तिया, पं सांवरमल शर्मा, राष्ट्रसेवक लक्ष्मणगढ़ (सीकर) आदि लोग भी उनके सभासद् थे। वे सभी व्यक्ति न्यूनाधिक, कुछ न कुछ चारित्रिक विशेषताएँ रखते थे। **(क्रमश:)**

साभार- **'राव गोपालसिंह खरवा'**

लेखक- **सुरजन सिंह झाझड़**

पृष्ठ 21 का शेष

पूज्य श्री तनसिंहजी

पूज्य श्री जो भी थे एक अजय योद्धा थे। वे एक असाधारण व अलौकिक व्यक्ति थे, जिन्हें हम महापुरुष कहें, युगावतार कहें, युग दृष्टा कहें, युग पुरुष कहें, दिव्य विभूति कहें, तरुण तपस्वी कहें, महामानव कहें, जो चाहे कह सकते हैं, पर उन्हें सामान्य व्यक्ति तो कतई नहीं कह सकते। उन्होंने एक साधारण नर से नारायण तक की ऊँचाई को छू लिया और हमें भी इसी मार्ग पर चलने के लिए अग्रसर किया। निसन्देह वे जो भी थे एक अजेय योद्धा थे।

रुग्ण क्षत्रिय समाज को एक व्यवहारिक शिक्षण और मार्गदर्शन देने हेतु पूज्य श्री तनसिंह जी ने समाज को श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में एक अमोघ अस्त्र दिया जिससे क्षत्रिय समाज पुन: दिव्य स्वरूप से नवाजा जा सके। श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य श्री का जीवन दर्शन है, एक जीवन प्रणाली है जिसके द्वारा न केवल लौकिक जीवन को सुख एवं आनन्दपूर्वक जिया जा सकता है बल्कि पारलौकिक लक्ष्य को भी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। संघ पूज्य श्री की दिव्य दृष्टि (रचना) है और उन्हीं के व्यक्तित्व और उनकी तपस्या से ओत-प्रोत है। संघ का कार्य एक आध्यात्मिक आन्दोलन है। संघ सामान्यजन को विशिष्ट बनाने की जीवन निर्माण पद्धति है। संघ के प्रांगण की सी शान्ति दुनिया में अन्यत्र कहीं नहीं।

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

गंगा देवी पल्ली–आंध्र प्रदेश

स्वयं सहायता

आंध्र प्रदेश के वारंगल जिले की मचापुर ग्राम पंचायत का एक छोटा-सा पुरवा था गंगा देवी पल्ली। ग्राम पंचायत से दूर और अलग होने के चलते विकास की हवा या सरकारी योजनाएँ यहाँ के लोगों तक कभी नहीं पहुँची। बहुत-सी चीजें बदल सकती थी लेकिन नहीं बदली क्योंकि लोग प्रतीक्षा किये जा रहे थे.... कि कोई आएगा और उनकी जिन्दगी सुधारेगा। करीब दो दशक पहले गंगा देवी पल्ली के लोगों ने तय किया कि वे खुद एक जुट होंगे और बदलाव की वो हवा स्वयं ले आयेंगे। जिसका वो अब तक सिर्फ इन्तजार कर रहे थे। आज गंगा देवी पल्ली एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि कैसे एक छोटे से पूरवे को आदर्श गाँव बनाया जा सकता है।

- आज गंगा देवी पल्ली में 100 प्रतिशत गृहकर इकट्ठा होता है।
- 100 प्रतिशत साक्षरता है,
- 100 प्रतिशत परिवार नियोजन का साधन अपनाते हैं,
- 100 परिवार छोटी बचत अपनाते हैं,
- बिजली बिल अदायगी 100 प्रतिशत है।
- समूचे गाँव के लिए पेयजल है,
- 100 प्रतिशत बच्चे स्कूल जाते हैं

शराबखोरी गंगा देवी पल्ली गाँव में एक बड़ी समस्या थी। इस सामाजिक बुराई ने अन्य समस्याओं को और बढ़ा दिया था जैसे घरेलू झगड़े, गुटों के झगड़े आदि। 70 के दशक उत्तरार्ध में गाँव के कुछ लोग इकट्ठा हुए और तय किया कि अब कुछ करना है। इन लोगों ने गाँव में लगातार बैठकें की कि शराब से क्या क्या नुकसान हो रहे हैं। इन बैठकों के लगातार चलने से 1982 में गाँव में पूर्ण मद्य निषेध हो चुका था। 1994 में गंगा देवी पल्ली भी ग्राम पंचायत बन गई। पंचायती राज एक्ट की धारा 40 में ग्राम सभा के सहयोग से समिति बनाने की बात कही गई है। गंगा देवी पल्ली गाँव की सफलता इन समितियों के गठन में पारदर्शिता और ईमानदारी में निहित है। किसी नई योजना की घोषणा माईक से की जाती है। ग्राम सभा की बैठक होती है और समिति के सदस्य चुन लिए जाते हैं। समितियाँ गठित होने के बाद लोग अपनी जिम्मेदारियों को गम्भीरता से लेते हैं और उसी हिसाब से काम करते हैं।

गाँव के मौजूदा सरपंच राजामौलि बताते हैं कि 'जन-सहभागिता' तभी से शुरू हो जाती है, जब लोग अपनी समस्याओं के बारे में बात करना शुरू करते हैं। इसके बाद वह समस्या का हल ढूँढने व लागू करने के लिए काम करते हैं। सरपंच राजमौलि प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित करते हैं इससे ये भी सुनिश्चित होता है कि उनकी अनुपस्थिति में भी विकास की कोई कमी न आने पाये। लोग हर स्तर पर ग्राम पंचायत से जुड़े होते हैं। लिहाजा सभी मुद्दों और फैसलों से वाकिफ रहते हैं उससे उत्तराधिकार और पारदर्शिता भी आती है। इसमें समूची प्रक्रिया स्वयं देखने को मिलती है। यह भी देखने को मिलता है कि किसी भी भ्रष्टाचार के बिना योजनाओं को लागू किया जा सकता है। गाँव में लिए गए फैसले लोगों पर थोपे नहीं जाते। समस्याएँ ग्राम सभा के सामने पेश की जाती हैं और उनका समाधान लोगों की तरफ से ही आ जाता है। इस प्रकार लोगों का अपना फैसला होता है। किसी नेता विशेष का फैसला नहीं किया जाता है।

गाँव की सड़कों पर अंधेरा रहता था लेकिन लोगों ने मिलकर पूरे गाँव में सड़कों पर रोशनी की

व्यवस्था कर ली। गाँव में पानी की बड़ी समस्या थी। इकलौता कुँआ लगभग 1 किलोमीटर दूर था। कुएँ से पानी निकालने के लिए लोगों को सुबह तीन बजे से लाईन में खड़ा होना पड़ता था। गाँव वालों ने एक संस्था की मदद से टंकी लगाने की योजना बनाई। इसमें से 15 प्रतिशत खर्च स्वयं गाँव वालों ने उठाया। ग्राम सभा में धन इकट्ठा करने के लिए लोगों के 18 समूह बनाए और महज 2 दिन में 65 हजार रुपये इकट्ठा किए गए। इस तरह बनी पानी की टंकी से आने वाले पानी के इस्तेमाल के लिए ग्राम सभा में विचार करके नियम बनाए गए ताकि कोई पानी बर्बाद न करें। और पूरा गाँव उसे मानता है। गाँव वाले जानते हैं कि अब उनके यहाँ पानी की कमी नहीं है लेकिन फिर भी इन नियमों का पालन इसलिए किया जाता है ताकि कोई व्यर्थ न गँवाए।

- टंकी का कनेक्शन केवल लोगों के घर के सामने लगेगा।
- हर घर आधा इंच का पाईप इस्तेमाल करेगा।
- हरेक नल जमीन से 4 फीट ऊपर होगा।
- नल के आसपास की जगह सूखी रखी जाएगी। किसी घर में पानी बहाया नहीं जाएगा।
- पौधे को पानी देने के लिए बाल्टी में पानी भरकर मग से पानी देंगे। कोई पाईप लगाकर नहीं देगा।

इन नियमों को तोड़ने वाले व्यक्ति का पानी कनेक्शन सील कर दिया जाता है और इसके बाद 100 रुपये का आर्थिक दण्ड देने पर ही दोबारा बहाल किया जाएगा। जल समिति की नियमित बैठक में चर्चा होती है। नल में आने वाला पानी फ्लोराइड युक्त है अतः पीने के काम में नहीं लिया जाता। पीने के पानी की व्यवस्था के लिए टाटा कम्पनी से सहयोग लेकर एक जल शुद्धि संयंत्र लगाया गया है। इससे होने वाला पानी गाँव वालों को एक रुपये प्रति कैन उपलब्ध कराया जा रहा है। इसकी पूरी व्यवस्था पंचायत की देखरेख में चलती है लेकिन कोई भी फैसला ग्राम सभा में ही लिया जाता है। इसलिए यह प्रक्रिया सही तरह से लागू की गई है। और गाँव का कोई भी व्यक्ति इसे हल्के में नहीं लेता है।

ग्राम सभा की बैठकों में ही गाँव में तय किया कि खुले में शौच जाने वाले लोगों पर 500 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। हालांकि नियम कायदे में ऐसे जुर्माने का प्रावधान नहीं था। लेकिन यह ग्राम सभा की सामूहिक इच्छा शक्ति थी जिसने जुर्माना लागू भी कराया और उसे वसूला भी। आज गाँव का हर व्यक्ति अपने घर में बने टॉयलेट्स का इस्तेमाल कर रहा है। ग्राम सभा ने गाँव में हरियाली योजना लागू करने के लिए एक समिति बनाई, हर घर को कहा गया कि वो अपनी जमीन पर पेड़ लगाये और साथ ही घर के सामने की सड़क के किनारे भी पेड़ लगाये गए। पेड़ों की सुरक्षा के लिए उन घरों को जिम्मेदार बनाया गया है, जिनके सामने ये लगे हैं। अगर ये घर मंगलवार व शनिवार को इन वृक्षों को पानी नहीं देते तो उनके लिए पीने का पानी बन्द किया जा सकता है।

गाँव में सब लोग अपने पशु बांध कर रखते हैं ताकि ये गाँव में लगाए जा रहे पौधों को खा न जाएँ। ग्राम सभा ने लोगों, विभिन्न सम्मितियों और पंचायत की विभिन्न गतिविधियों के दिशा-निर्देश तय कर रखे हैं। पहले लोग इनके पालन में आना कानी करते थे। लेकिन जब उनके यह समझ में आ गया कि वह उनके और पूरे गाँव की भलाई के लिए है तब दिशा निर्देशों का पालन अपनी आदत बना लिया। इस गाँव में 256 घर और दूसरे संस्थान हैं इन सभी के द्वारा ग्राम पंचायत को दिये जाने वाला कुल टैक्स 95706 बनता है। यह रकम बिना नागा किए ग्राम पंचायत को अदा कर दी जाती है। जिस तरह विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए लोगों ने पूरी जिम्मेदारी ली उसे देखते हुए सरकारी संस्थाएं और बड़े औद्योगिक घराने भी ग्राम पंचायत को सहयोग देने को आगे आए।

अध्याय–4 अनूठे गाँव
औंदाथुराई
उर्जावान पंचायत

औंदाथुराई पंचायत कोयम्बटुर (तमिलनाडु) के मेटापलयम तालुके में स्थित है। हरियाली से आच्छादित यह गाँव अनुपम छटा बिखेरते हुए वर्षों से अन्य गाँवों के लिए आदर्श बना हुआ है।

जिस देश में अनेक गाँव अपर्याप्त बिजली आपूर्ति से जूझ रहे हों और समस्या के समाधान के लिए लाचारी भरी निगाहों से सरकार की तरफ देख रहे हों। वहीं एक गाँव ऐसा भी है, जिसने स्वयं अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक ऊर्जा का उत्पादन कर एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है।

राजसहायता से निजी कम्पनियों को कोयम्बटूर जिले में पवन ऊर्जा संयत्र लगाते देख, औंदाथुराई पंचायत के सरपंच श्री शनमुगम ने सोचा क्यों ना हम भी पंचायत के लिए पवन ऊर्जा परियोजना प्रारम्भ करें! बिजली उत्पन्न करने के लिए जमीन और पवन (Land and Wind) जैसे प्राकृतिक स्रोत की ही तो जरूरत होती है। यह दोनों ही स्रोत गांव वासियों की सम्पत्ति है।

पवन ऊर्जा सयंत्र लगाने के लिए पंचायत ने अपने बचत फण्ड से 40 लाख रुपये दिये। सन् 2005 में इस परियोजना के लिए पंचायत ने एक करोड पन्द्रह लाख रुपये का बैंक से ऋण लिया। तमिलनाडु राज्य सरकार ने इस योजना को लाभकारी उद्यम योजना के रूप में स्वीकृति प्रदान की। सन् 2006 में बिजली उत्पादन प्रारम्भ कर इसने हमारे देश में अपनी किस्म की पहली योजना होने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

पंचायत द्वारा संचालित पवन ऊर्जा सयंत्र की क्षमता 350 किलोवाट की है। जो वर्ष में सात लाख युनिट उत्पादन करता है। पंचायत अपनी जरूरत पूरी करने के उपरान्त शेष ऊर्जा को तमिलनाडु विद्युत निगम को बेचती है। इससे पंचायत को करीब 20 लाख रुपये के राजस्व की प्राप्ति होती है। इसी आय से पंचायत ने अब तक बैंक ऋण का भुगतान किया है और भविष्य में इस राजस्व का उपयोग विकास कार्य में होगा।

औंदाथुराई पंचायत ने पीने के लिए 9 KW क्षमता का बॉयोमास गैसीफायर बिजली उत्पादन संयत्र भी लगा रखा है। इनके साथ ही सौर ऊर्जा आधारित सड़क, गलियों की बत्तियों का प्रबंधन भी कर रखा है, और खाना पकाने के लिए बॉयोगैस आधारित कनेक्शन हर घर में उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

विभिन्न प्राकृतिक ऊर्जा स्रोतों से बिजली उत्पादन कराने के अलावा राज्य सरकार की ''ग्रीन हाऊस परियोजना'' के अन्तर्गत 850 ग्रीन हाऊसेज का निर्माण कर जरूरतमंदों को आवंटित कर दिये हैं। राज्य में यह अपने आप में एक कीर्तिमान है।

इन सभी विकास कार्यों का श्रेय श्री शनमुगम को जाता है। ग्रामीण उनके योगदान की बड़ी-बड़ी प्रशंसा करते हैं। ग्रामीणों ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्री शनमुगम को 1996 से 2006 तक सरपंच रहने का गौरव प्रदान किया। जब पंचायत को महिला के लिए आरक्षित कर दिया तो शनमुगम की धर्म पत्नी श्रीमती एस लिंगामल को 2006 से 2016 तक सरपंच का पद दे सम्मानित किया।

औंदाथुराई पंचायत की अनुपम उपलब्धियों से शिक्षा और प्रेरणा प्राप्त करने के लिए अन्य गाँवों के सरपंच, महाविद्यालयों के प्रवक्ता, विद्यार्थी, विदेशी प्रतिनिधियों के समूह, राजनेता और प्रबंधन अधिकारी बडी संख्या में यहाँ पधारते रहते हैं।

(क्रमशः)

यक्ष द्वारा पाण्डवों से कलियुग पर पूछे गये प्रश्न

– गोविन्द सिंह कसनाऊ

महाभारत काल में पांच पाण्डव तथा द्रोपदी 13 वर्ष के वनवास तथा 1 वर्ष के अज्ञातवास पर थे। एक दिन दोपहर के समय वन के एक वृक्ष के नीचे बैठे थे। गर्मी की ऋतु थी। द्रोपदी को प्यास लगी परन्तु पानी का घड़ा खाली हो गया था। युधिष्ठिर ने सबसे छोटे भाई सहदेव को पानी का घड़ा भरकर लाने का आदेश दिया।

सहदेव बड़े भाई की आज्ञा की अनुपालना में पानी लाने हेतु घड़ा लेकर पानी की तलाश में वन में निकल गया। पानी की खोज में वह एक सरोवर के किनारे पहुंचा। जूते सरोवर की तीर पर उतार कर पानी से घड़ा भरने हेतु सरोवर में प्रवेश किया। ज्योंहि घड़ा सरोवर के जल में डूबोया एक यक्ष प्रकट हुआ। यक्ष ने कहा पानी मत भरो। यदि पानी से घड़ा भरना है तब पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो। अन्यथा मैं तुम्हें कैद कर लूंगा। सहदेव यक्ष के प्रश्न का उत्तर देने के लिए सहमत हो गया।

यक्ष ने एक छोटे से उद्यान का दृश्य सहदेव को दिखाया। इस उद्यान में घास लगी हुई थी जिसमें एक घोड़ा घास चर रहा है। घोड़ा घास मुंह से भी चर रहा है और मलद्वार से भी। जब सहदेव ने यह दृश्य अच्छी तरह देख लिया तब यक्ष ने दृश्य का रहस्य बताने हेतु सहदेव को आदेश दिया। सहदेव दृश्य का रहस्य नहीं बता सका। यक्ष ने सहदेव को अदृश्य कर कैद कर लिया।

काफी समय व्यतीत होने पर युधिष्ठिर ने नकुल को आदेशित किया कि ''सहदेव को ढूंढो और पानी लेकर आओ।''

नकुल सहदेव के पदचिन्हों को देखता हुआ उसी सरोवर पर पहुंचा। नकुल ने देखा कि सहदेव के जूते पड़े हैं और रिक्त घड़ा पड़ा है। नकुल समझ गया कि सहदेव यहीं है। नकुल ने भी जूते उतारे तथा घड़ा लेकर पानी भरने हेतु सरोवर के अन्दर प्रवेश किया। यक्ष प्रकट हुआ और नकुल को अपने प्रश्न का उत्तर देने के उपरान्त पानी घड़े में भरने हेतु कहा।

यक्ष ने एक दृश्य नकुल को दिखाया जिसमें एक गाय तथा उसकी बछड़ी खड़े हैं। गाय अपनी बछड़ी के थनों में से उसका दूध पी रही है। जब नकुल ने दृश्य अच्छी तरह देख लिया तब यक्ष ने नकुल को दृश्य का रहस्य बताने हेतु कहा। नकुल दृश्य का रहस्य बताने में असमर्थ रहा और यक्ष ने नकुल को भी अदृश्य कैद कर लिया।

जब नकुल भी वापस नहीं आया तब युधिष्ठिर ने अर्जुन को दोनों छोटे भाईयों को ढूंढने तथा घड़ा भर कर पानी लाने हेतु आदेशित किया।

अर्जुन भी दोनों छोटे भाईयों के पद चिन्हों को देखता हुआ उसी सरोवर पर पहुंचा। दोनों छोटे भाईयों की तरह उसने भी अपने जूते उतारे तथा घड़े में पानी भरने का प्रयास किया। यक्ष ने उसी प्रकार अर्जुन को भी मना किया तथा अर्जुन के सम्मुख एक दृश्य पैदा किया।

इस दृश्य में 8 बराबर के घड़े हैं। उनमें से एक घड़ा पानी से भरा है, शेष घड़े खाली हैं। भरा हुआ घड़ा ऊपर उठता है और 10 मीटर ऊपर जाने पर उसमें से पानी गिरना प्रारम्भ होता है। पानी एक घड़े में गिरता है, जब पहला घड़ा भर जाता है तब पानी दूसरे घड़े में गिरना प्रारम्भ होता है और जब दूसरा घड़ा भी भर जाता है तब पानी तीसरे घड़े में गिरने लगता है और इस प्रकार सातों घड़े पानी से भर जाते हैं और ऊपर गया हुआ घड़ा वापस पृथ्वी तल पर आ जाता है।

अब सातों पानी से भरे हुए घड़े उसी ऊँचाई तक आकाश में जाते हैं और सातों घड़ों से पानी गिरना

प्रारम्भ हो जाता है और खाली एक घड़े में गिरता है। सातों घड़े पानी से खाली हो जाते हैं परन्तु नीचे पड़ा एक घड़ा उन सातों घड़ों के पानी से नहीं भरता है।

यक्ष ने अर्जुन से इसका रहस्य पूछा परन्तु अर्जुन दृश्य का रहस्य बताने में असमर्थ रहा। यक्ष ने अर्जुन को भी अदृश्य कैद में डाल दिया।

जब तीनों छोटे भाई वापस नहीं आये तब युधिष्ठिर ने भीम को आदेशित किया। भीम भी उसी सरोवर पर पहुंचा और यक्ष ने भीम के समक्ष भी एक दृश्य उत्पन्न किया जिसमें एक छोटा सा सरोवर है और उसमें एक हँस मोतियों को अलग करता जा रहा है और सरोवर का कीचड़ बड़े चाव से खा रहा है। भीम भी दृश्य का रहस्य बताने में असमर्थ रहा । यक्ष ने भीम को भी अदृश्य कर जेल में बन्दी बना लिया।

युधिष्ठिर चारों भाईयों के वापस नहीं आने पर चिन्तित हो गया और द्रोपदी को वृक्ष के नीचे अकेला छोड़कर अपने छोटे भाईयों की खोज में स्वयं चल दिया। युधिष्ठिर भी उसी सरोवर पर पहुँचा और चारों भाईयों के जूते तथा खाली पानी का घड़ा देखकर समझ गया कि चारों भाई यहीं पर हैं।

युधिष्ठिर ने भी हाथ में घड़ा लिया और जलाशय में से घड़े में पानी भरने का प्रयास किया। उसी समय यक्ष प्रकट हुआ और युधिष्ठिर के पानी भरने से पूर्व अपनी शर्त रखी तथा उसके भाइयों के बारे में बताया। युधिष्ठिर ने जवाब दिया ''मैं मेरे छोटे भाईयों को छुड़ाने आया हूं। पहले वह दृश्य दिखाइये जिससे मेरे सबसे छोटा भाई सहदेव को आप मुक्त कर सको।''

यक्ष ने सहदेव को दिखाया दृश्य प्रकट किया। युधिष्ठिर ने कहा ''कलयुग आयेगा। सरकारी सेवक वेतन प्राप्त करेंगे साथ ही जनता का कार्य करने के बदले रिश्वत लेंगे।'' कलियुग में भ्रष्टाचार व्याप्त होगा। यक्ष ने युधिष्ठिर का जवाब सुनकर सहदेव को मुक्त कर दिया।

युधिष्ठिर ने नकुल को मुक्त करने हेतु यक्ष को कहा। यक्ष ने नकुल को दिखाया दृश्य युधिष्ठिर के समक्ष प्रस्तुत किया और दृश्य का रहस्य पूछा। युधिष्ठिर ने कहा कलियुग में माता-पिता अपनी संतान का शोषण करेंगे। अपना दायित्व पूर्ण करने की बजाय अपनी संतान को बेचने में भी संकोच नहीं करेंगे। युधिष्ठिर का जवाब सुनकर यक्ष ने नकुल को मुक्त कर दिया।

युधिष्ठिर ने अर्जुन को दिखाये गये दृश्य के बारे में यक्ष को बताया कि माता-पिता अपनी संतान यानी पुत्र-पुत्रियों के सात या इससे अधिक भी होने पर भी उनका भरण-पोषण कर लेंगे परन्तु कलियुग में जब वे वृद्ध होंगे, कार्य करने में असमर्थ होंगे तब उनके पुत्र-पुत्रियाँ अपने माता-पिता का भरण पोषण नहीं करेंगे। माता-पिता को वे अनावश्यक बोझ समझेंगे। यक्ष ने युधिष्ठिर के जवाब से संतुष्ट होकर अर्जुन को मुक्त कर दिया।

अन्त में युधिष्ठिर ने यक्ष से भीम को मुक्त करने का आग्रह किया और भीम को दिखाये गये दृश्य का यक्ष को उत्तर दिया कि ''कलियुग में समाज जिन व्यक्तियों को आदर्श व्यक्ति समझेगा, उनका खान-पान गन्दा होगा। वे मदिरा का सेवन करेंगे तथा मांस आदि का भक्षण करेंगे।''

चारों प्रश्नों के उत्तर से यक्ष सन्तुष्ट हो गया तथा सरोवर से पानी का घड़ा भरने की अनुमति दे दी। अतः बुद्धिबल (Mental Power) सर्वोपरि बल है।

क्रोध और घमण्ड अपने आप विपत्ति उत्पन्न करते हैं। क्रोधी मनुष्य दूसरों को हानि पहुँचाता है परन्तु उनसे अधिक अपने आप को घायल कर लेता है।

– बिली ग्रेहम

अपनी बात

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में होने वाला मुख्य कार्यक्रम इसी माह 28 तारीख को जवाहर लालनेहरू स्टेडियम, दिल्ली में होगा। जन्म शताब्दी से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम स्थान-स्थान पर इस शताब्दी वर्ष में होचुके हैं और मुख्य कार्यक्रम तक चलते रहेंगे। संघशक्ति व पथ-प्रेरक के ग्राहकों से भी सविनय निवेदन है कि मुख्य कार्यक्रम में सपरिवार पधारें और कार्यक्रम की शोभा बढावें। कार्यक्रम मना कर या कार्यक्रम में सम्मिलित होकर हम किसी परिवार या संस्था पर अहसान नहीं कर रहे हैं बल्कि हमारे समाज को कर्तव्य प्रेरक आदर्श मार्ग प्रदान करने व तद् अनुकूल विचार व भाव प्रदान करने वाले के प्रति समाज की कृतज्ञता के भाव का प्रकटीकरण ही कार्यक्रम का आधार है। क्षात्रधर्म की बात क्षत्रिय परिवारों तक पहुँचे यह कार्य तो लगातार चलता ही आ रहा है और आगे से आगे चलता ही रहेगा। दिल्ली हमारे भारत देश की राजधानी है और भारत के प्रत्येक प्रदेश से कुछ लोग किसी न किसी कारण से दिल्ली में निवास करते हैं। उन तक भी क्षत्रिय के लिए परमेश्वर निर्देशित क्षात्रधर्म की बात पहुँचे, यह कार्यक्रम का आयोजन स्थल दिल्ली में रखने का कारण है।

वर्तमान में विषैले वातावरण में कोई पुनीत कार्य करना चाहे, अधिकार प्राप्त करने की इच्छा न रखकर कर्तव्य कर्म करने को ही अपना अधिकार मानने की शिक्षा देना चाहे, सामाजिक हित के लिये स्वहित का त्याग कर जीवन जीना चाहे, उसको अनेक प्रकार के विरोधों का सामना करना ही पड़ता है। और जो ऐसे आदर्श आचरण के व्यक्तियों के निर्माण की कार्यशाला चलाना चाहे उसका तो पूरा जीवन ही कष्टमय-कर्मशीलता युक्त बन जाता है। लगभग 55 वर्ष की आयु का पू. तनसिंह जी का जीवन ऐसी ही विघ्न-बाधाओं को चीरता हुआ गुजरा और समाज के लिए एक आदर्श मार्ग की नींव को दृढ़ता प्रदान करने का कार्य किया।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में संघ सम्बन्धित अनेक प्रवचन सुनने को मिलते हैं। वे प्रवचन पू. तनसिंह जी की ही देन है जिसका लाभ शिविरार्थियों को मिलता रहा है। उसके अलावा संघ साहित्य के रूप में भी अनेक पुस्तकें उन्होंने रचित की जो हमारी साधना का पथ-प्रदर्शन करने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त उन्होंने संघशक्ति में भी अनेक रचनाएँ दी हैं जो शिक्षा दायक हैं। इन रचनाओं को जन्म शताब्दी वर्ष हेतु प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका में शामिल की जाए ऐसा अनेक लोगों का संदेश मिला। स्मारिका के लिए नये लेख भी प्राप्त होने शुरू हुए, पर पू. तनसिंह जी की संघशक्ति में प्रकाशित रचनाएँ ही इतनी हैं कि उनसे ही स्मारिका का आकार काफी बड़ा हो जाता है, साथ में विज्ञापन भी होंगे। इसलिए निर्णय लिया गया कि नई रचनाएँ स्मारिका में नहीं, संघशक्ति में ही प्रकाशित होती रहेंगी। स्मारिका में केवल पू. तनसिंह जी की रचनाएँ ही होंगी जो विभिन्न प्रकार से प्रेरणा प्रदान करती हैं। पू. तनसिंह जी ने अनेक पत्र लिखे हैं। उनके पत्र भी बड़े प्रेरणादायी इंगित लिए रहते थे। कुछ पत्र जो संघशक्ति में समय-समय पर छपते रहे थे, उनको भी एक पुस्तक रूप में (पत्र-दर्पण) प्रकाशित किया जा रहा है।

Certified Hallmarked Jewellery

विश्वसनीयता में एक मात्र नाम

SHIV JEWELLERS

DIAMOND • KUNDAN • GOLD • SILVER

विशेषज्ञ: सोने व चांदी की पायजेब, अंगूठी, डायमंड, कुन्दन के आभूषण बैंकॉक आईटम्स आदि

शुद्ध राजपूती ट्रेडिशनल ज्वेलरी व सोने, चांदी, कुंदन
और डायमंड ज्वेलरी के होलसेल विक्रेता

पता - सफायर कॉम्प्लेक्स, जैन मेडिकल के सामने, खातीपुरा रोड, झोटवाड़ा, जयपुर

मो.: 07073186603 Follow us on Instagram @shivjewellersjaipur

Hukam Singh Kumpawat (Akadawas, Pali)

"क्षात्र धर्म की दिव्य प्रभा से
जग उजियारा होगा रे"

पूज्य श्री तनसिंह जी

जन्म शताब्दी समारोह

28 जनवरी 2024, रविवार,
अपराह्न 12.15 बजे
जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली

निवेदक

श्री क्षत्रिय युवक संघ

जनवरी, सन् 2024
वर्ष : 61, अंक : 01

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति
ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...
....
....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह